CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8.1

साईं बुल्लेशाह की अमृतवाणी

संकलन
गोपाल ठाकुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साईं बुल्लेशाह की अमृतवाणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साईं बुल्लेशाह की अमृतवाणी
संकलन—गोपाल ठाकुर

प्रकाशक
पिलग्रिम्स पब्लिशिंग

पिलग्रिम्स बुक हाउस
बी० 27/98 ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221010
टेलीफोन-(91-542) 2314060
फैक्स-(91-542) 2312456
email-pilgrims@satyam.net.in
website-www.pilgrimsbooks.com

कॉपीराइट © सन् 2008 पिलग्रिम्स पब्लिशिंग

आवरण—आशा मिश्रा
अक्षर संयोजन—सुरेश जायसवाल

ISBN—81-7769-555-X

इस पुस्तक का पुनर्प्रकाशन, किसी भी प्रकार का आंशिक या पूर्ण प्रकाशन, इलेक्ट्रॉनिक प्रयोग, छायाचित्र का उपयोग आदि, विशेषज्ञ की समीक्षा के अलावा, प्रकाशक की अनुमति के बिना कानून का उल्लंघन है।

मुद्रक—पिलग्रिम प्रेस प्रा० लि०, लालपुर, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो शब्द

सूफी सन्त साईं बुल्लेशाह का जन्म सन् १६८० ई. में पाकिस्तान स्थित बहावलपुर रियासत के उच्च गलानियाँ नामक गाँव में हुआ था। आपके पिताश्री शाह मुहम्मद दरवेश अपने समय के अरबी, फारसी और कुरान शरीफ के प्रख्यात विद्वान थे तथा पांडोके भट्टियां गांव के मस्जिद के मौलवी थे। मस्जिद की व्यवस्था के साथ ही आप गांव के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दिया करते थे। बालक बुल्ले शाह पर पिताजी की विद्वता तथा ख़ुदा की इबादत का भरपूर प्रभाव पड़ा। उनके गुरु मौलाना मुहीउद्दीन तथा हज़रत गुलाम मुर्तजा ने उनकी प्रतिभा को निखारने का पूरा प्रयास किया।

साईं बुल्लाशाह की अमृतवाणियों से स्पष्ट हो जाता है कि वे अरबी, फारसी के उच्च कोटि के विद्वान थे। आपके अध्यात्मिक गुरु का नाम सूफ़ी सन्त अब्दुल कादिर जिलानी था, हालांकि मान्यता है कि साईं बुल्लेशाह को पहले से ही रूहानी सिद्धियाँ प्राप्त थीं। आपका मानना था कि रूहानी उन्नति का राज मन को बाहर और संसार की ओर मोड़ने में है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु के सान्निध्य से आपकी आंतरिक शक्तियाँ मुखर हो उठी और आप मानवता की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। आप सदैव सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते रहे। आप ईश्वर को प्रेमी, प्रियतम के रूप में देखते थे तथा सदा यही कहते थे कि यह शरीर मंदिर है, जिसमें खुदा निवास करता है। आपकी पद्यात्मक अमृतवाणियां इतनी सरल थीं कि, लोग-बाग उसे याद कर सुरीले आवाज में गाया करते थे, ऐसा आज भी है।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित की गईं आपकी अमृतवाणियाँ कुल्लियात बुल्लेशाह, कलाम बुल्लेशाह तआरफ, काफियाँ बुल्लेशाह, बुल्लेशाह का काव्य लोक, काफियाँ साईं बुल्लेशाह आदि ग्रंथों से एकत्रित की गई हैं।

विश्वास है साईं बुल्लेशाह की अमृतवाणियों का यह संकलन भटके लोगों को राह दिखाने में समर्थ होगा।

—गोपाल ठाकुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रार्थना

कौण आया पहन लिबास कुड़े।
तुसीं पुच्छो नाल इख़लास कुड़े।
हत्थ खूंडी मोढे कंबल काला,
अक्खियां दे विच विस्से उजाला।
चाक नहीं है कोई मतवाला,
पुच्छो बिठा के पास कुड़े।
चाकर चाक न इस नूं आखो,
एह न ख़ाली गुझड़ी घाता।
विछड़यां होयां पहली रातों,
आया करन तलाश कुड़े।
न एह चाकर चाक कहीं दा,
न इस ज़रा शौक महीं दा।
न मुश्ताक है दूध दहीं दा,
न उस भुक्ख प्यास कुड़े।
बुल्ला शौह लुक बैठा ओहले,
दस्से भेत न मुख से बोले।
बाबल वर खेड़यां तों टोले,
वर मांहढा मांहढे पास कुड़े।
कौण आया पहन लिबास कुड़े।
तुसीं पुच्छो नाल इख़लास कुड़े।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुरु की महानता

विच कसूर पठानां दे एह, होया मरद हक्कानी।
ख़वास अल रसूल अल्लाह दिओ, पोता पीर जीलानी।
हज़रत शाह इनायत पासो, अज़मत उस ने पाई।
विच लाहौर जिन्हां दा रोज़ा, दक्खण पासे साई।
बुल्ले शाह दिल विच आखे, मुरशद फड़ीए चुण के।
दिल विच क्योंकर होग तसल्ली, पाणी पीए पुण के।
कर के शौक जद ओह हज़रत, मुरशद ढूँडन भाई।
लहौर शहर वल अव्वल हज़रत, टुर के नज़र टिकाई।
आ के विच लाहौर शहर दे, अन्दर करन गुज़ारा।
बाग़ जेहड़े विच शाह इनायत, ओथे करन उतारा।
सी अंब पक्का उस वेले, नज़र वली नूं आया।
कर बिसमिल्ला डिट्ठा अव्वल, अंब हेठां ओह धाया।
शाह इनायत करे आवाज़ां, 'सुण तूं मरदा राहिया।
अंब चुराया तुद्ध असाडा, दे दे सानूं भाइया'।
बुल्ले शाह कहे, 'न चढ़या, ऊपर अंब तुमारे।
नाल हवा दे अंब टुट के, झोली पया हमारे'।
बिसमिल्ला पढ़ अंब उतारया, कीती है तूं चोरी।
बुल्ले शाह वी जाण लया, है बरकत इस विच पूरी।
शाह इनायत दे कदमीं डिग्गा, उस दम मरद रूहानी।
राज़ी हो के पैत कबूली, पाया राज़ निहानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन और मृत्यु

अब लगन लग्गी किह करीए ? न जी सकीए ते न मरीए।
तुम सुनो हमारे बैना, मोहे रात दिने नहीं चैना।
हुण पी बिन पलक न सरीए। अब लगन........
एह अगन बिरहों दी जारी, कोई हमारी प्रीत निवारी।
बिन दर्शन कैसे तरीए। अब लगन........
बुल्ले पई मुसीबत भारी, कोई करो हमारी कारी।
एह अजेहे दुख कैसे जरीए। अब लगन........
मैनूं छड गए आप लद गए, मैं विच की तकसीर।
रातीं नींद न दिने भुक्ख, अक्खीं पलटया नीर।
छवीआं ते तलवारां कोलों, इश्क दे तिक्खे तीर।
इश्क जेड न ज़ालम कोई, एह ज़हमत बेपीर।
इक पल साइत आराम न आवे, बुरी बिरहों दी पीर।
बुल्ला शौह जे करे इनायत, दुख होवण तग़ईर।
मैनूं छड गए आप लद गए, मैं विच की तकसीर।

मेरे माही क्यों चिर लाया ए।
कौह बुल्ला हुण प्रेम कहाणी, जिस तन लग्गे सो तन जाणे।
अंदर झिड़कां बाहर ताहने, नेहों ला एह सुख पाया ए।
नैनां कार रोवन दी पकड़ी,इक मरना दूजे जग दी फकड़ी।
बिरहों जिंद अवल्ली जकड़ी, नी मैं रो रो हाल वंजाया ए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुल्ले शौह घर लपट लगाई, रसते में सभ बन तन जाई।
मैं वेखां इनायत साईं, जिस मैनूं शौह मिलाया ए।
मैनूं दरद अवलड़े दी पीड़, आ मियां रांझा दे दे नज़ारा।
मुआफ करीं तकसीर, तखत हज़ारयों रांझा तुरया।
हीर निमाणी दा पीर, होरनां दे नौशौह आवे जावे।
की बुल्ले विच तकसीर,घायल कर के मुख छुपाया।
एह चोरियां किण दस्सियां, नेहों लगा के मन हर लीता,
फेर न अपणा दर्शन दीता। ज़हर प्याला मैं आपे पीता,
सी अकलों मैं कच्चियां। इस दा मूल न खाणा धोखा,
जंगल बसती मिले न ठौर। दे दीदार होया ज़द राही,
अचनचेत पई गल फाही। डाढी कीती बेपरवाही,
मैनूं मिलया ठग्ग लहौर।

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।
सद्दो नी मैनूं धीदो रांझा हीर न आखे कोई।
रांझा मैं विच मैं रांझे विच होर ख़याल न कोई।
मैं नहीं ओह आप है अपनी आप करे दिलजोई।
हत्थ खूंडी मेरे अग्गे मंगू मोढे भूरा लोई।
बुल्ला हीर सलेटी वेखो कित्थे जा खलोई।
अब हम गुम हुए, प्रेम नगर के शहर।
अपने आप को सोध रहा हूँ, न सिर हाथ न पैर।
खुदी खोई अपना पद चीता, तब होई गल खैर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लत्थे धगड़े पहले घर थीं, कौण करे निरवैर।
बुल्ला शौह है दोहीं जहानीं, कोई न दिसदा ग़ैर।
सब साध कहो कोई चोर नहीं, हर घट विच आप समाया है।
टुक बूझ कौन छुप आया है।

जीवन का उद्देश्य

बुल्ला शाह संभाल तूं आप ताईं,
तूं तां अनंत लग देह में कहां सोवें।
बुल्ला शाह संभाल जब आप देखा,
सदा सोहंग प्रकाश होए झुलदा एं।
सुख रूप अखंड चेतन हैं तूं,
बुल्ला शाह पुकारदे वेद चारे।
बुल्ला शाह संभाल तूं आप ताईं,
तूं तां सदा अनंद हैं चानना एं।
तू किधरों आया? किधर जाणा?
अपना दस्स ठिकाणा।

बुल्ला की जाणा मैं कौण॥
न मैं मोमन विच मसीतां, न मैं विच कुफ़र दीआं रीतां।
न मैं पाकां विच पलीतां, न मैं मूसा न फ़रऔन॥
न मैं अंदर बेद किताबां, न विच भंगां न शराबां।
न विच रिंदां मस्त ख़राबां, न विच जागण न विच सौण॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न विच शादी न ग़मनाकी, न मैं विच पलीती पाकी।
न मैं आबी न मैं ख़ाकी, न मैं आतिश न मैं पौण॥
न मैं अरबी न लाहौरी, न मैं हिंदी शहर नगौरी।
न हिंदू न तुरक पशौरी, न मैं रैहन्दा विच नदौन॥
न मैं भेद मज़हब दा पाया, न मैं आदम हव्व दा जाया।
न मैं अपना नाम धराया, न विच बैठन न विच भौन॥
अव्वल आखर आप नूं जाणा, न कोई दूजा होर पछाणा।
मैथों होर न कोई स्याणा, बुल्ला शौह खड़ा है कौण॥
हम बे कैद, मन बे कैद, न रोगी न वैद।
न मैं मोमन, न मैं काफ़र, न मुल्ला न सैद।
चौदीं तबकी सैर असाडा, किते न हुंदा कैद।
तूं उस मुकामों आया हैं, ऐथे आदम बण के आया हैं।
बुल्ला बिचार कीती, ख़ुदी छोड़ खुद होए खसम साईं।
ख़ुदी खोई आपणा पद लीता, तब होई गल्ल ख़ैर।
जे दाज विहूणी जावेंगी, तां किसे मूल न भावेंगी।
ओथे नूं किवें रिझावेंगी, कुझ लै फ़कीरां दी मत कुड़े।
बुल्ला शौह घर आपणे आवे, चूड़ा बीड़ा सभ सुहावे।
गुण होसी तां गल लावै, नहीं रोसें नैनी रत्त कुड़े।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संसार और शरीर

वाह वाह माटी दी गुलज़ार।
माटी घोड़ा, माटी जोड़ा, माटी दा असवार।
माटी माटी नूं दौड़ावै, माटी दी खड़कार।
माटी माटी नूं मारन लग्गी, माटी दे हथयार।
जिस माटी पर बहुती माटी, सो माटी हंकार।
माटी माटी नूं देखण आई, माटी दी ए बहार।
हस्स खेड फिर माटी होवे, पैंदी पाउं पसार।
बुल्ला एह बुझारत बुज्झे, तां लाह सिरों भोएं मार।

भवसागर से पार

नित्त पढ़ना एं इसतग़फ़ार कैसी तोबा है एह यार।
सावें दे के लवें सवाई, वाधयां दी तूं बाज़ी लाई।
मुसलमानी एह किथों आई,
नित्त पढ़ना एं इसतग़फ़ार कैसी तौबा है एह यार।
जित्थे ना जाना ओथे जाएं, माल पराया मुँह धर खाएं।
कूड़ किताबां सिर ते चाएं, एह तेरा इतबार।
नित्त पढ़ना एं इसतग़फ़ार कैसी तोबा है एह यार।
ज़ालम ज़ुलमों नाहीं डरदे, आपणीं अमलीं आपे मरदे।
मुंहों तौबा दिलों न करदे, एथे ओथे होण खुआर।
नित्त पढ़ना एं इसतग़फ़ार कैसी तौबा है यह यार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमात्मा का प्रेम

पत्तियां लिखां मैं शाम नूं,
पिया मैनूं नज़र ना आवे।
आंगन बना डरौणा, कित बिध रैन विहावे।
काग़ज करूँ लिख दामने, नैन आंसू लाऊँ।
बिरहों जारी हौं जरी, दिल फूक जलाऊँ।
कुफ़र काफ़र रा व दीन दींदार रा,
ज़र्रा-ए दरदे दिल अत्तार रा।

अनोखा दर्द

इक रांझा मैनूं लोड़ीदा।
कुन फ़यीकून अग्गे दीआं लग्गीआं, नेहों न लगड़ा दा।
नी मैनूं लगड़ा इश्क अवल्लड़ा रोज़ अज़ल दा।
विच कड़ाई तल तल पावे तलयां नूं चा तलदा।
मोयां नूं एह वल वल मारे, वलयां नूं चा वलदा।
क्या जाणा कोई चिणग कखीं ए, नित्त सूल कलेजे सलदा।
तीर जिगर विच लग्गा इश्कों, हलायां भी नहीं हलदा।
बुल्ला शाह दा नेहों अनोखा, नहीं रलायां रलदा।

प्रकाश का पुंज

उस दा मुक्ख इक जोत है घुँघट है संसार।
घुँघट में वह छिप गया, मुख पर आँचल डार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे तूं कैसे चैंचर चाए, तारे खारी हेठ छुपाए।
मुंज दी रस्सी नाग बणाए, तेरे सेहरां तों बलहारी।
वाह वाह रमज़ सज्जन दी होर, आशिक बिना न समझे कोर।
बुल्ला शौह नूं कोई न वेखे, जो वेखे सो किसे न लेखे।
उसदा रंग न रूप न रेखे, ओह ई होवे हो के चोर।
सुलहीं ना मंनदा बात न पुछदा आख वेखां की करदा।
कल मैं कमली ते ओह कमला हुण क्यों मैथों डरदा।
ओहले बैह के रमज़ चलाई दिल नूं चोट लगाई।

जिंद कुड़िकी दे मुँह आई।
हिक करदिआं ख़ुदी हंकार, ओहना नूं तारनैं वे अड़्या।
इक रैहन्दीयां नित्त खुआर, सड़ीआं नूं साड़नैं वे अड़्या।
चिक्कड़ भरीआं नाल, नित्त झुंमर घतना एं वे अड़्या।
मैं लाया हार शिंगार, मैथों उठ नसना एं वे अड़्या।
वत्त ना करसां माण, रंझेटे यार दा वे अड़्या।

प्रभु की सृष्टि

मैं गल्ल ओथे दी करदा हां, पर गल्ल करदा वी डरदा हां।
नाल रूहां दे लारा लाया, तुसीं चलो मैं नाले आया।
एथे परदा चा बनाया, मैं भरम भुलाया फिरदा हां।
बुल्ला शाह बेअंत डूंघाई, दो जग बीच न लगदी काई।
उरार पार दी खबर न काई, मैं बे सिर पैरीं तरदा हां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं गल्ल ओथे दी करदा हां, पर गल्ल करदा वी डरदा हां।
तजूं मसीत तजूं बुतखाना, बरती रहां न रोज़ा जाना।
भुल गया वुज़ू नमाज़ दुगाना, तैं पर जान करां बलहार।
पीर पैगंबर इस दे बरदे, इनस मलाइक सजदे करदे।
सर कदमां दे उत्ते धरदे, सब तों वड्डी ओह सरकार।
जे कोई उस नूं लखया चाहे, बाझ वसीले लखया न जाये।
शाह इनायत भेद बताये, तां खुल्हे सभ इसरार।
हुण मैं लखया सोहणा यार, जिसदे हुसन दा गरम बाज़ार।
जद अहद इक इकल्ला सी, न ज़ाहर कोई तजल्ला सी।
न रब रसूल न अल्ला सी, न जब्बार ते न कहार।
एस नेहों दी उलटी चाल, हुन मैं लखया सोहणा यार।
बेचून न बेचगूना सी, बेशबीआ बेनमूना सी।
न कोई रंग नमूना सी, हुण गूनांगू हज़ार।
एस नेहों दी उलटी चाल, हुण मैं लखया सोहणा यार।
प्यारा पहन पोशाकां आया, आदम अपना नाम धराया।-
अहद तोंबन अहमद आया, नबीयां दा सरदार।
कुन किहा फ़यीकून कहाया, बेचूनी से चुन बनाया।
अहद दे विच्च मीम रलाया, तां कीता ऐड पसार।
एस नेहों दी उलटी चाल, हुण मैं लखया सोहणा यार।
आप इशारा अक्ख दा कीता, तां मधुआ मनसूर ने पीता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूली चढ़ के दर्शन कीता, होया इश्क कमाल।
एस नेहों दी उलटी चाल, हुण मैं लखया सोहणा यार।

प्रियतम की खोज़

साजन की भाल सर दीआ, लहू मथ अपना पीआ।
कफ़न बाहों से सी लिया, लहद में पा उतारेगा।
बुल्ला शौह इश्क है तेरा, उसी ने जी लिया मेरा।
मेरे घर बार कर फेरा, वेखां सिर कौन वारेगा।
इश्क़ की तेग़ से मूई, नहीं वो ज़ात की दूई।
और पिया पिया कर मूई, मोयां फिर रूह चितारेगा।
हुण मैनूं मजनू आखो न, दिन दिन लैला हुंदा जां।
डेरा यार बनाए तां, एह तन बंगला बणाया ए।

न हिन्दू, न ही मुसलमान

परदा किसतों राखीदा, क्यों ओहले बह बह झाकीदा।
पहिलों साजन साजे दा, हुण दसना ए सबक नमाज़े दा।
हुण आया आप नज़ारे नूं, विच लैला बण बण झाकीदा।
हुण साडे वल धाया ए, न रैहन्दा छुपा छुपाया ए।
किते बुल्ला नाम धराया ए, विच ओहला रखया ख़ाकी दा।
आपे आहू आपे चीता, आपे मारन धाया।
आपे साहिब आपे बरदा, आपे मुल्ल विकाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कदी हाथी ते असवार होया, कदी ठूठा डांग भवाया।
कदी रावल जोगी भोगी हो के, सांगी सांग बनाया।
बाज़ीगर क्या बाज़ी खेली, मैनूं पुतली वांग नचाया।
मैं उस पड़ताली नचना हां, जिस गत मित या लखाया।
ढोला आदमी बण आया। कीहनूं ला-मकानी दसदे हो।
आपे सुणें ते आप सुणावें, आपे गावें आप बजावें।
हत्थों कौल सरोद सुणावें, अनलहक दी तार हिलावें।
सूली ते मनसूर चढ़ावे, ओथे कोल खलो के हसदे हो।
किते रूमी ते किते जंगी हो, किते टोपी पोश फ़रंगी हो।
किते मैख़ाने विच भंगी हो, किते मिहर महिरी बन वसदे हो।

प्रियतम अन्तर में

भुल्ली हीर ढूंडेंदी बेले। रांझा यार बुक्कल विच खेले।
मैंनूं सुध बुद्ध रही न सार। इश्क दी नवयों नवीं बहार।
इक लाज़म बात अदब दी ए, सानूं बात मलूमी सब दी ए।
हर हर विच सूरत हर दी ए, किते ज़ाहर किते छुपेंदी ए।
जिस पाया भेत कलंदर दा, राह खोजया आपणे अन्दर दा।
ओह वासी है सुख मंदर दा, जित्थे चढ़दी है न लैहन्दी ए।
ऐथे दुनिया विच अंधेरा ए, एह तिलकन बाज़ी वेहड़ा ए।
वड़ अन्दर देखो केहड़ा ए, क्यों ख़फ़तन पई ढूंढेंदी ए।
बुल्ला असां थीं वक्ख नहीं, बिन शौह थी दूजा कक्ख नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर वेखण वाली अक्ख नहीं, तांही जान पई दुख सैहन्दी ए।
सभ घट मेरा साईंयां, सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वा घट के, जा घट परगट होय।
ओह घर मेरे विच आया, उस आ मैनूं भरमाया।
पुच्छो जादू है कि साया, उस तों लओ हकीकत सारी।
ओह दिल मेरे विच वसदा, बह नाल असाडे हसदा।
पुछनीआं बातां तां उठ नसदा, लै के बाजां वांग उडारी।
जां सबक इश्क दा पढ़या, मसजिद कोलों जिऊड़ा डरया।
डेरे जा ठाकुर दे वड़या, जित्थे वजदे नाद हज़ार।
बेद कुरानां पढ़ पढ़ थक्के, सजदे करदयां घस गए मत्थे।
न रब तीरथ न रब मक्के, जिन पाया तिस नूर अनवार।
इश्क दी नवियों नवीं बहार।

शरीर मन्दिर है

सत्त समुंदर दिल दे अंदर, दिल से लहर उठावांगी।
टूणें कामन करके नी मैं प्यारा यार मनावांगी।
मैं घर खिला शगूफा होर।
वेखिआं बाग बहारां होर, हुण मैनूं कुछ न कैहणा।
एहो कौल ते एहो करार, दिलबर दे विच रैहणा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परदा या रूकावट

नेड़े वस्से थां न दस्से, ढूंढां कित वल जाही।
इकसे घर विच वसदिआं रसदिआं, कित वल कूक सुणाही।
भुल्ले रहे नाम न जपया, ग़फ़लत अंदर यार है छपया।
सिध पुरखा तेरे अंदर वसया, लग्गीआं नफ़स दियां चाटां।
मक्के गयां गल्ल मुकदी नाहीं, जिचर दिलों न आप मुकाईए।
गंगा गयां गल्ल मुकदी नाहीं, भावें सौ सौ गोते लाईए।
गया गयां गल्ल मुकदी नाहीं, भावें कितने पिंड भराईए।
बुल्ला शाह गल्ल तां ही मुकदी, जद मैं नूं खड़े लुटाईए।
बुल्ला मैं जोगी नाल व्याही, लोकां कमलयां ख़बर न कोई।
मैं जोगी दा माल, पंजे पीर मना के।
वारया कुफ़र वड्डा मैं दिल थीं, तली ते सीस टिका के।
मैं वडभागी मारया खावंद, हत्थीं ज़हर पिला के।

दसवां द्वार

इस वेहड़े दे नौं दरवाजे, दसवां गुप्त रखाती।
ओस गली दी मैं सार न जाणां, जहां आवे पिया जाती।
खेड लै वेहड़े घुंमी घुँम, नाल पिया संग राती।
इस वेहड़े विच आला सोंह्दा आले दे विच ताकी।
ताकी दे विच सेज विछावां नाल पिया संग राती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रियतम को देखने वाली आँख

बुल्ला असां थीं वक्ख नहीं, देखण वाली अक्ख नहीं।
ताहियों जान जुदाईयां सैहन्दी ए, अब तो जाग मुसाफ़िर।
मोती चूनी पारस पासे, पास समुंदर मरो प्यासे।
खोल अक्खीं उठ बौह भिखारे, अब तो जाग मुसाफ़िर।
ज़ुलफ सियाह दे विच यद बैज़ा दे चमकार दिखाओ यार।
सतगुरु बिना जप तप सभ झूठा, बड़े आलम फ़ाज़ल का।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, गुरु मिले भेदी तिल का।

स्मरण और ध्यान

तुध कारन मैं ऐसा होया, नौ दरवाज़े बंद कर सोया।
दर दसवें त्ते आण खलोया, कदे मंन मेरी अशनाई॥
मैं जागी सभ जग सोया। खुल्ही प्लक तां उठ के रोया।
मैं चूहड़ेटड़ी आं सच्चो साहिब दी सरकारों।
ध्यान दी छजली ज्ञान का झाड़ू काम क्रोध नित झाड़ों।
ज़िकर कर फिकर हमेशा, एह लफ़ज़ तिक्खा तलवारों हू।
ज़ाकर जेहड़े ज़िकर कमावण, इक पल न फ़ारग यारों हू।
जो दम ग़ाफ़ल सो दम काफ़र, सानूं मुरशद समझाया हू।
उलटी गंग बहायो रे साधो, तब हर दर्शन पाए।
प्रेम की पूनी हाथ में लीजे, गुझ मरोड़ी पड़ने न दीजै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान का तकला ध्यान का चरखा, उलटे फेर भुआए।
उलटे पाउं पर कुंभ करन जाए, तब लंका का भेद उपाए।
दैहसर लुटया हुण लछमण बाकी, तब अनहद नाद बजाए।
एह रात गुरू की पैरीं पावे, गुर सेवक तभी सदाए।
अंमृत मंडल मूं तब ऐसी दे, कि हरी हर हो जाए।
उलटी गंग बहायो रे साधो, तब हर दर्शन पाए।

शाह रग में प्रवेश

शाह रग थीं रब दिसदा नेड़े, लोकां पाए लंमे झेड़े।
वां के झगड़े कौण नबेड़े, भज्ज भज्ज उमर गवाई ए।
गल्ल रौले लोकां पाई ए, भज्ज भज्ज उमर गवाई ए।
नाहुन अकरब लिख दितोई, हुवामाकुम सबक दितोई।
वफ़ी अनफ़ोसेकुम हुक्म कीतोई, केहा घूंघट पायो ई।
प्रभु अकरबदी बंसी बजाई, मन अरफ़ूतनफ़सा कूक सुनाई।
जिन्हां अलफ़ ज़ात सही कीती, ओह रखदे कदम अगेरे हू।
बाहू नाहुन-अकरब लभ लिओ ने, झगड़े कुल नबेड़े हू।
हे-हू दा जामा पहन करारां, इसम कमावां ज़ाती हू।
कुफ़र इसलाम मुकाम ना मंज़ल, न ओथे मौत हयाती हू।
शाह रग थीं नज़दीक लधोसू, पा अंदरूने झाती हू।
असीं ओन्हां विच ओह असां विच, दूर करीए कुरबाती हू।
चौधीं तबकीं सैर असाडा, किते न हुंदे कैद।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारा आप जमाल विखाले, होय कलंदर मस्त मतवाले।
हंसा दे हुण वेख के चाले, भुल्ल गई कागां दी टोर नी।
नैण लगा मत गई गवाती, नाहुन अकरब ज़ात पछाती।
साईं शाह रग तों वी नेड़े, पड़तालिओ हुण आशिक केहड़े।

समाधि

बुल्ला जद आप नूं सही कता, तां सुतड़े, अंग नामोड़दी हां.
छड झूठ भरम दी बस्ती नूं। कर इश्क दी कायम मस्ती नूं।
गए पहुंच सज्जन दी हस्ती नूं। जेहड़े हो गए सुम बुकम उम।
हिजर तेरे ने झल्ली करके कमली नाम धराया।
सुमन बुकमन उमीयन हो के आपणा वक्त लंघाया।
कर हुण नज़र करम दी साईंयां न कर ज़ोर धगाणे।
इश्क जिन्हां दी हड्डीं पैंदा, सोई नर जीवत मर जांदा।
जिस ते इश्क एह आया है, ओह बेबस कर दिखलाया है।
नशा रोम रोम में आया है, इस विच न रत्ती ओहला है।
हर ओर दिसेंदा मौला है, बुल्ला आशिक वी हुण तरदा है।
जिस फ़िकर पिया दे घर दा है, रब मिलदा वेख उधरदा है।
मन अंदर होया झाता है, जिस पिच्छे मसत हो जाता है।
बुल्लया हिजरत विच इसलाम दे, मेरा नित्त है ख़ास मुकाम।
नित्त नित्त मरां ते नित्त जीवां, मेरा नित्त नित्त कूच मुकाम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमात्मा से मिलन

मूतू कबलंता मूतू होया, मोयां नूं मार जवाली ओ यार।
बुल्ला शौह मेरे घर आया, कर कर नाच वखाली ओ यार।
करां नसीहत वड्डी जे कोई, सुण कर दिल ते लावेंगा।
मोए तां रोज़े हशर नूँ उट्ठन, आशिक न मर जावेंगा।
जे तूं मरें मरन तों पहलों, मरने दा मुल्ल पावेंगा।
सुराह यासीन मुज़म्मल वाली, बदलां गरज संभाली यार।
ज़ुलफ़ सयाह दे विच यद बैज़ा, दे चमकार विखाली यार॥
जो रंग रंगया गूढ़ा रंगया, मुरशद वाली लाली ओ यार।
अरश मुनव्वर बांगां मिलयां, सुणियां तख़्त लाहौर।
शाह इनायत कुंडीयां लाईयां, आपे खिचदा डोर।

फ़ना और बका

बुल्ला नूं वेखण जाओगे, इन्हां अक्खियां नूं समझाओगे।
दीदार तदांही पाओगे, बण शाह इनायत घर आओगे।
मैं बेगुण क्या गुण कीआ है, तन पिया है, मन पिया है।
ओह पिया सो मेरा जीआ है, पिया से रल मिल जाओगे।
मैं फानी आप को दूर करां, तैं बाकी आप हज़ूर करां।
जे अज़हर वांग मनसूर करां, खड़ सूली पकड़ चढ़ाओगे।
कदी आपणी आख बुलाओगे, तन पिया है, मन पिया है।
नी सइयो मैं गई गवाती, खोल घूंघट मुख नाची।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जित वल वेखां दिसदा ओही, कसम ओसे दी होर न कोई।
ओहो मोहकम फिर गई थरोई, जब गुर पत्तरी वाची।
नाम निशान न मेरा सइयो, जां आखां तां चुप्प कर रहियो।
एह गल्ल मूल किसे न कहियो, बुल्ला ख़ूब हकीकत जाची।

अनहद शब्द

असीं आजज़ कोट इलम दे, ओसे आंदे विच कलम दे।
बिन कलमे दे नाहीं कंम दे, बाझों कलमे पार नहीं।
बंसी अचरज कान्ह बजाई।
बंसी वालया चाका रांझा, तेरा सुर सभ नाल है सांझा।
तेरियां मौजां साडा मांझा, साडी सुरती आप मिलाई।
बंसी वालया कान्ह कहावें, शब्द अनेक अनूप सुणावें।
अक्खियां दे विच नज़र न आवें, कैसी बिखड़ी खेड रचाई।
बंसी सब कोई सुणे सुणावे, अर्थ एहदा कोई बिरला पावे।
जो कोई अनहद दी सुर पावे, सो इस बंसी दा शैदाई।
सुणियां बंसी दीआं घनघोरां, कूकां तन मन वांगू मोरां।
डिट्ठियां दीआं तोड़ां जोड़ां, अर्थ एहदा कोई बिरला पावे।
इक सुर दी सभ कला उठाई, सईयो हुण मैं साजन पायो ई।
इस बंसी दे पंज सत्त तारे, आपो अपणी सुर भरदे सारे।
इक्को सुर सभ विच दम मारे, साडी उस ने होश भुलाई।
इस बंसी दा लंमा लेखा, जिसने ढूंडा तिस ने देखा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सादी इस बंसी दी रेखा, एस वजूदों सिफ़त उठाई।
बुल्ला पुज पए तकरार, बूहे आअ खलोते यार।
रक्खीं कलमे नाल ब्योपार, तेरी हज़रत भरे गवाही।
आओ फ़कीरो मेले चल्लिए, आरफ़ का सुण वाजा रे।
अनहद शबद सुणो बहु रंगी, तजीए भेख प्याजा रे।
अनहद वाजा सरब मिलापी, निरवैरी निरसाजा रे।
मेले बाझों मेला औंतर, रुढ़ गया मूल ब्याजा रे।
कठिन फ़कीरी रस्ता आशिक, कायम करो मन बाजा रे।
बंदा रब्ब भयो इक बुल्ला, सुख पड़ा जहान बराजा रे।
तूं आयों ते मैं न आई, गंज मखफ़ी दी तैं मुरली बजाई।
आख अलस्त गवाही चाही, ओथे कालूबला सुणायो ई।
बुल्ला लामकान दी पटड़ी उत्ते बह के नाद बजावांगी।

शब्द की महिमा

मुरली बाज उठी अणघातां, सुण के भुल गईआं सब बातां।
लग गए अनहद बाण न्यारे, झूठी दुनिया कूड़ पसारे।
साईं मुख वेखण दे वणजारे, मैनूं भुल गईया सब बातां।
हुण मैं चंचल मिरग फहाया, ओसे मैनू बन्ह बहाया।
सिरफ़ दुगाना इश्क पढ़ाया, रह गईआं त्रै चार रकातां।
अनहद बाजा बजे सुहाना, मुतरब सुघड़ां तान तराना।
नमाज़ रोज़ा भुल गया दुगाना, मद प्याले देण कलाल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घड़याली दयो निकाल नी, अज्ज पी घर आया लाल।
जब जोगी तुम वसल करोगे, बाँग कहो भावें नाद वजावे।
भक्ति भगत नतारो नाहीं, भगत सोई जेहड़ा मन भावे।
मिली है बांग रसूल दी फुल खिड़या मेरा।
सदा होया मैं हाज़री हां हाज़र तेरा।
हर पल तेरी हाज़री एहो सजदा मेरा।
जेहड़ा तन विच लग्गा दूआ रे, एह कौण कहे मैं मूआ रे।
तन सभ इनायत हूआ रे, फिर बुल्ला नाम धराया है।

कलमा या शब्द

इक रब दा नां खज़ाना ए, संग चोरां यारां दाना ए।
ओह रहमत दा खसमाना ए, संग ख़ौफ़ रफ़ीक बणाया ए।
बुल्ला एथे रहिण न मिलदा, रोंदे पिटदे चल्ले।
इक नाम ओसे दा खरची है, होर बचया नहीं कुझ पल्ले।
क्या सरधन क्या निरधन पौड़े, अपणे अपणे देस को दौड़े।
लद्धा नाम लै लयो सभारे, अब तो जाग मुसाफ़र प्यारे।
बुल्ला बात अनोखी एहा, नच्चण लग्गी तां घूंघट केहा।
तुसीं परदा अक्खीं थीं चाओ, तुसीं रल मिल नाम धिआओ।
भुक्ख मरंदी नाम अल्ला दे, एहो बात चंगेरी ए।
दोवें थोक पत्थर थीं भारी, औखी जही एह फेरी ए।
जे सड़सें तूं इस जग अंदर, अग्गे सरदी पावेंगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिल का कलमा

कानै कप के कलम बनावन, लिख न सक्कण कलमा हू।
जे ज़बानी कलमा हर कोई आखे, दिल दा पढ़दा कोई हू।
जित्थे कलमा दिल दा पढ़िए, ओथे जीभे मिले न ढोई हू।
दिल दा कलमा आशक पढ़दे, की जानण यार गलोई हू।
मैं कलमा पीर पढ़ाया बाहू, सदा सहागण होई हू।
कलमे दा तूं ज़िकर कमावें, कलमे दे नाल न्हावें हू।
आशक राज़ माही दे कोलों, कदे न थींदे वांदे हू।
नींद हराम तिन्हां ते होई, जेहड़े ज़ाती इसम कमांदे हू।
करदे वुज़ू इसम आज़म दा, जेहड़े दरिया विच न्हाते हू।
आशक पढ़न नमाज़ पिरम दी, जैं विच हरफ़ न कोई हू।
जीभ ते होंठ ना हिल्लण बाहू, ख़ास नमाज़ी सोई हू।
कलमे दी कल तदां पैसी, जदां गल कलमे वंज खोल्ही हू।
चौदां तबक कलमे दे बाहू, की जाणे ख़लकत भोली हू।
चौदां तबक कलमे दे अंदर, कुरान किताबां इलमां हू।
कलमे जेही कोई निहमत न बाहू, अंदर दोहीं जहानी हू।
कलमा मेरे लाल जवाहर, कलमा हट्ट पसारी हू।
एथे ओथे दोहीं जहानी, बाहू कलमा दौलत सारी हू।
कलमे नाल बुझाए दोज़ख, जित्थे अग्ग बले अज़गाही हू।
कलमे नाल बहिश्तीं जाना, कलमा करे सफ़ाई हू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होर दवा न दिल दी काई, कलमा दिल दी कारी हू।
कलमा दूर जंगाल करेंदा, कलमे मैल उतारी हू।
अल्ला तैनूं पाक करेसी बाहू, जे ज़ाती इस्म कमावें हू।
अलफ अल्ला चंबे दी बूटी, मुर्शिद मन विच लाई हू।
नफ़ी असबात दा पानी मिलिआ, सु हर रगे हर जाई हू।
अंदर बूटी मुशक मचाइआ, जां फुल्लन पर आई हू।
जीवे मुर्शिद कामल बाहू, जिस एह बूटी लाई हू।
मीम मूतू वाली मौत न मिली, जैं विच इश्क हयाती हू।
मौत वसाल थीवसी इक्को, जद इस्म पढ़यो सी जाती हू।
कलमे दी कल तदां पैसी, जद कलमे दिल नूं फड़या हू।
कुफ़र इसलाम पता लग्गा, जद भंन जिगर विच वड़या हू।
कलमे लक्ख करोड़ां तारे, वली कीते सै राही हू।
कलमे दी कल तदां पैसी जां मुर्शिद कलमा दसया हू।
सारी उमर विच कुफ़र दे जाली बिन मुर्शिद दे दसया हू।
काने कप्प के कलम बनावण, लिख न सकण कलमा हू।
एह कलमां सानूं पीर पढ़ाया, ज़रा न हुंदा लंमा हू।
मैं कलमा पीर पढ़ाया बाहू सदा सुहागण होई हू।
कलमे बाझों फ़कर कमावे, सो काफ़र मरे दीवाना हू।
सैआं वर्हयां दी करे इबादत, अल्ला कंनों बेगाना हू।
गफ़लत कंनो न खुल्हसण परदे, जाहल है बुतख़ाना हू।
मैं कुरबान तिन्हां दे बाहू, जिन्हां मिलया यार यगाना हू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यार यगाना मिलसी तैनूं, जे सिर दी बाज़ी लाएं हू।
इश्क अल्ला विच हो मसताना, हू हू सदा अलाएं हू।
नाल तसव्वर इस्म अल्ला दे, दंम नूं कैद लगाएं हू।
ज़ाती नाल जा जाती रलया, तद बाहू नाम सदाएं हू।

सतगुरु की आवश्यकता

बुल्लेशाह दी सुणो हकायत, हादी फड़यां होग हदायत।
मेरा मुरशद शाह इनायत, ओह लंघाए पार।
जो कोई उस नूं लखणा चाहे, बाझ वसीले लखया न जाए।
शाह इनायत भेद बताए तां खुल्हे इसरार।
नदियों पार मुल्क सज्जण दा हिरस लहर ने घेरी।
सतगुरू बेड़ी फड़ी खलोते तूं क्यों लाई देरी।
झबदे आवीं वे तबीबा नहीं तां मैं मर गइयां।
हत्थी ढिलक पई मेरे चरखे दी, मैथों कत्तया मूल न जावे।
हुण दिन चढ़या कद गुज़रे, मैनूं राते मुँह दिखलावे।
तकले नूं वल पै पै जांदे, कौण लुहार लिआवे।
तकले तों वल लाह लुहारा, मैंडा तंद टुट टुट जावे।
घड़ी-घड़ी एह झोले खांदा, छल्ली इक न लाह्वे।
सै मणां दा कत्त लिआ बुल्लया, जे शौह मैनूं गल लावे।
फड़ मुर्शिद आबद ख़ुदाई हो, विच मसती बेपरवाही हो।
बे-ख़ाहश बे-निवाई हो, विच दिल दे ख़ूब सफ़ाई हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुल्ला बात सच्ची कदों लुकदी ए,
गल्ल इक नुकते विच मुकदी ए।

इक औखा वेला आवेगा, सभ साक सैण भज्ज जावेगा।
कर मदद पार लंघावेगा, ओह बुल्ले दा सुलतान कुड़े।
कर कत्तण वल ध्यान कुड़े।
बुल्ला शौह मेरे घर आवसी, मेरी बलदी भा बुझावसी।
इनायत दम दम नाल चितारया, सानूं आ मिल यार प्यारया।
हादी मैनूं सबक पढ़ाया। ओथे ग़ैर न आया जाया।
मुतलक ज़ात जमाल विखाया। वहदत पाया शोर नी।
ढोला आदमी बण आया। मौला आदमी बण आया।
वाह जिस पर करम आवेहा है। तसदीक ओह वी तैं जेहा है।
सच्च सही रवायत एहा है। तेरी नज़र मेहर तर जाईंदा।
हर का सेवक सो हर जेहा। भेद न जाणो माणस देहा।
ज्यों जल तरंग उठह बहुभाँती। फिर सललै सलल समायेंदा।
माही नहीं कोई नूर इलाही, अनहद दी उस मुरली वाई।
मुठ्ठी ओस हीर सयाल डाहडे कामण पा के।
बुल्लया दूरों चल के आया जी, ओहदी सूरत ने भरमाया जी।
ओसे पाक जमाल दिखाया जी, ओह हिक्क दम न भुलंदा।
बाग़ बहारां तां तूं देखें चाकर थीवें साईं दा।
बुल्लया इस नूं देख हमेशा एह है दरशन साईं दा।
माही वे तैं मिलयां सभ दुक्ख होवण दूर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकां दे भाणे चाक चकेटा साडा रब ग़फ़ूर।
जिचर न इश्क़ मजाज़ी लागे, सूई सीवे न बिन धागे।
इश्क़ मजाज़ी दाता है, जिस पिच्छे मस्त हो जाता है।
इश्क़ जिन्हां दी हड्डीं पैंदा, सोई नर जीवत मर जाता।
इश्क़ पिता ते माता ए, जिस पिच्छे मस्त हो जाता ए।
कभी ऐ हकीकते मुंतज़र नज़र आ लिबासे मजाज़ में।
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं मेरी जबीने निआज़ में।
सरापा नूर हो जाए जिसका आश्के सादक।
भला ऐ दिल हसीं ऐसा भी है कोई हसीनों में।
रांझा जोगीड़ा बण आया, वाह सांगी सांग रचाया।
एस जोगी दे नैण कटोरे, बाज़ां वांगूं लैंदे डोरे।
मुख डिट्ठयां दुख जावण झोरे, इन्हां अक्खियां लाल लखाया।
एस जोगी की नी निशानी, कंन विच मुंदरां गल विच गानी।
सूरत इस दी यूसुफ़ सानी, एस अल्फों अहद बणाया।
रांझा जोगी ते मैं जुगयाणी, इस दी ख़ातर भरसां पाणी।
ऐवें पिछली उमर विहाणी, एस हुण मैनूं भरमाया।
बुल्ला शौह दी हुण गत पाई, प्रीत पुराणी शोर मचाई।
एह गल्ल कीकूं छुपे छुपाई, लै तख़त हज़ारे नूं धाया।
रांझा जोगीड़ा बण आया, वाह सांगी सांग रचाया।
मेरे क्यों चिर लाया माही, नी मैं उस तों घोल घुमाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुन फ़यीकून आवाज़ा आया, तख़त हज़ारयों रांझा धाया।
चूचक दा उस चाक सदाया, ओह आहा साहिब सफाई।
मेरे क्यों चिर लाया माही।
जोगी शहर खेड़यां दे आवे, जिस घर मतलब सो घ्र पावे।
बूहे जा के नाद वजावे आपे होया फ़ज़ल इलाही।
बूहे पै खुड़बिआ धिगाने, टूट पया खप्पर डुल पए दाणे।
इस दे वल छल कौण पछाणे, चीना रुल गया विच पाही।
चीना चुण चुण झोली पावे, बैठा हीरे तरफ़ तकावे।
जो कुझ लिखया लेख सो पावे, रो रो लड़दे नैण सिपाही।
मेरे क्यों चिर लाया माही।
अनहद द्वार का आया गवरीआ, कंगण दसत चढ़ाई।
मूंड मुंडा मोहे प्रीती को, रेन कंना में आई।
बंसी वालया चाका रांझा, तेरा सुर सभ नल है सांझा।
तेरीआं मौजां साडा मांझा, साडी सुरती आप मिलाईं।
कर सौदा पास सौदागर है, एह वेला हत्थ न आवीगा।
वणज वणोला नाल शिताबी, वाणजारा उठ जावीगा।
उस दिन कुझ न हो सकसी, जद कूच नगारा लावीगा।
हिजाब करें दरेवशी कोलों, कब लग हुकम चलावेंगा।
एस इश्क़ दी झंगी विच मोर बुलेंदा।
सानूं काबा ते किबला प्यारा यार दिसेंदा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानूं घायल करके ख़बर न लइया।
तेरे इश्क़ नचाया कर थईया थइया।
बुल्ला शौह ने आंदा इनायत दे बूहे।
जिस मैनूं पवाए चोले सावे ते सूहे।
जां मैं मारी है अड्डी मिल पिआ है वहीआ।
तेरे इश्क नचाया कर थईया थईया।

जो रंग रंगया गूहड़ा रंगया, मुरशद वाली लाली ओ यार।
वेखो नी शाह इनायत साईं, मैं नाल करदा किवें अदाई।
कदी आवे कदी आवे नाहीं, त्यों त्यों मैंनूं भड़कन भाहीं।
नाम अल्ला पैग़ाम सुणाईं, मुख वेखण नूं न तरसाईं।
बुल्ला शौह इनायत आरफ़ है, ओह दिल मेरे दा वारस है।
मैं लोहा ते ओह पारस है, तुसीं ओसे दे संग घसदे हो।
मैं लोहा ते ओह पारस है, तुसीं ओसे दे संग घसदे हो।
कीहनूं लामकानी दसदे हो, तुसी हर रंग दे विच वसदे हो।
नाल रूहां दे लारा लाया, तुसीं चल्लो मैं नाले आया।
ऐथे परदा चा बणाया, मैं भरम भुलाया फिरदा हां।
मैं गल्ल ओथे दी करदा हां, औगुण वेख न भुल मियां रांझा,
याद करीं उस कारे नूं। दिल लोचे तख़त हज़ारे नूं।
अलस्त किहा जद अक्खियां लाईयां,
हुण क्यों यार विसारी? मैं कसुंभड़ा चुण चुण हारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्वान और ब्रह्मज्ञानी

अलफ़ अल्ला नाल रत्ता दिल मेरा, मैनूं बे दी ख़बर न काई।
बे पढ़दयां मैंनू समझ न आवे, लज्जत अलफ़ दी आई।
एन ते ग़ैन नूँ समझ न जाणा, गल्ल अलफ़ समझाई।
बुल्लया कौल अलफ़ दे पूरे, जेहड़े दिल दी करन सफ़ाई।

अंमां बाबे दी भलयाई

अंमां बाबे दी भलयाई, ओह हुण कंम असाडे आई।
अंमां बाबा चोर धुरां दे, पुत्तर दी वडयाई।
दाणे उत्तों गुत्त विगुत्ती, घर घर पई लड़ाई।
असां कजीए तदांही जाले, जदां कणक ओन्हां टरकाई।
खाए खैरा ते फाटीए जुंमा, उलटी दस्तक लाई।

आपणा दस्स टिकाणा

आपणा दस्स टिकाणा, किधरो आया, किधर जाणा।
जिस ठाणे दा माण करें तूं, ओहने तेरे नाल न जाणा।
जुलम करें ते लोक सतावें, कसब फड़यो लुट खाणा।
कर लै चावड़ चार दिहाड़े, ओड़क तूं उठ जाणा।
शहर-ख़ामोशां दे चल वसीए, जित्थे मुलक समाणा।
भर भर पूर लंघावे डाढा, मलक-उल-मौत मुहाणा।
इन्हां सभनां थीं ए, बुल्ला औगुणहार पुराणा।
तूं किधरों आया, किधर जाणा, आपणा दस्स टिकाणा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपणे संग रलाईं प्यारे

आपणे संग रलाईं प्यारे, आपाणे संग रलाईं।
पहलों नेहों लगाया सी तैं, आपे चाईं चाईं।
मैं पाया ए कि तुध लाया, आपणी ओड़ निभाईं।
राह पवां तां धाड़े बेले, जंगल लक्ख बलाईं।
भौंकण चीते ते चितमचिते, भौंकण करन अदाईं।
पार तेरे जगातर चढ़या, कंढ़े लक्ख बलाईं।
हौल दिले दा थर थर कंबदा, बेड़ा पार लंघाईं।
कर लईं बंदगी रब्ब सचे दी, पवण कबूल दुआईं।

अब क्यों साजन चिर लायो रे

अब क्यों साजन चिर लायो रे।
ऐसी मन में आई का, दुख सुक सभ वंजायो रे।
हार शिंगार को आग लगाऊं, घट पर ढांड मचायो रे।
सुण के ज्ञान की ऐसी बातां; नाम निशान सभी अणघातां।
कोयल वांगूं कूकां आतां, तैं अजे वी तरस ना आया रे।
मुल्लां इश्क ने बांग दिवाई, उठ दौड़न गल्ल वाजब आई।
कर कर सजदे घर वल धाई, मत्थे महराब टिकायो रे।
प्रेम नगर दे उलटे चाले, ख़ूनी नैण होए खुशहाले।
आपे आप फसे विच जाले, फस फस आप कुहायो रे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुल्ला संग प्रीत लगाई, सोहणी बण तण सभ कोई आई।
वेख के शाह इनाइत साईं, जीअ मेरा भर आयो रे।

आओ सइयो रल देओ नी वधाई

आओ सइयो रल देओ नी वधाई। मैं बर पाया रांझा माही।
अज्ज तां रोज़ मुबारक चड़या। रांझा साडे वेहड़े वड़या।
हत्थ खुंडी मोढे कंबल धरया। चाकां वाली शकल बणाई
आ सइयो रल दे नी वधाई। मुकुट गऊआं दे विच रुलदा।
जंगल जूहां दे विच रुलदा। है कोई अल्ला दे वल भुलदा।
हक़ीक़त ख़बर न काई। आओ सइयो रल दे नी वधाई।
बुल्ले शाह इक्क सौदा कीता। पीता ज़हर प्याला पीता।
न कुझ लाहा टोटा लीता। दरद दुक्खां दी गठड़ी चाई।
आओ सइयो रल देओ नी वधाई।

आ मिल यार सार लै मेरी

आ मिल यार सार लै मेरी, मेरी जान दुक्खां ने घेरी।
अंदर खवाब विछोड़ा होया, ख़बर न पैंदी तेरी।
सुंञी बन विच लुट्टी साईंआं, चोर शंग ने घेरी।
मुल्लां काज़ी राह बतावण, देण धर्म दे फेरे।
इह तां ठग ने जग दे झीवर, लावण जाल चुफेरे।
करम शरआ दे धरम बतावण, संगल पावण पैरीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जात मज़हब एह इश्क न पुछदा, इश्क शरअ़ा दा वैरी।
नदियों पार मुलक सज्जन दा, लोभ लहर ने घेरी।
सतगुर बेड़ी फड़ी खलोते, तैं क्यों लाई ए देरी।
बुल्ला शाह शौह तैनूं मिलसी, दिल नूं देह दलेरी।
प्रीतम पास ते टोलना किसनूं, भुलयों सिखर दुपहरी।
आ मिल यार सार लै मेरी, मेरी जान दुक्खां ने घेरी।

इक अलफ़ फढ़ो छुटकारा ए

इक अलफ़ पढ़ो छुटकारा ए।
इक अलफ़ो दो तिन चार होए, फिर लक्ख करोड़ होए।
फिर ओथों बाझ शुमार हो, हिक अलफ़ नुकता न्यारा ए।
क्यों पढ़ना ए गड्डु किताबां, सिर चाना एं पंड अज़ाबां दी।
हुण होयों शकल जलादां दीं, अग्गे पैंडा मुशकल भारा ए।
बण हाफ़ज़ कुरान करें, पढ़ पढ़ के साफ़ ज़बान करें।
फिर नेअमत विच ध्यान करें, मन फिरदा ज्यों हलकारा ए।
बुल्ला बी बोहड़ बोया सी, ओह बिरछ वड्डा जां होया सी।
जद बिरछ ओह फ़ानी होया सी, फिर रह गया अकारा ए।

इक टूणा अचंभा गावांगी

इक टूणा अचंभा गावांगी, मैं रुठा यार मनावांगी।
एह टूणा मैं पढ़ पढ़ फूकां, सूरज अगन जलावांगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अक्खीं काजल काले बादल, भवां से आंधी लयावांगी।
सत समुंदर दिल दे अंदर, दिल से लहर उठावांगी।
बिजली होकर चमक डरावां, बादल हो गिर जावांगी।
इश्क अंगीठी हरमल तारे, चाँद से कफ़न बनावांगी।
ला मकान की पटड़ी ऊपर, बह के नाद बजावांगी।
लाए सो आन मैं शौह गल आपणे, तद मैं नार कहावांगी।
इक टूणा अचंभा गावांगी।

इक नुक़ता यार पढ़ाया ए

इक नुक़ता यार पढ़ाया ए।
ऐन ग़ैन दी इक्का सूरत, इक नुकते शोर मचाया ए।
सस्सी दा दिल लुट्टण कारन, होत पुन्नू बण आया ए।
बुल्ला शौह दी ज़ात न काई, मैं शौह इनाइत पाया ए।
इक नुकता यार पढ़ाया ए।

इक नुक़ते विच गल्ल मुकदी ए

इक नुक़ते विच गल्ल मुकदी ए।
फड़ नुकता छोड़ हिसाबां नूं, कर दूर कुफ़र देआं बाबां नूं।
लाह दोज़ख़ गोर अज़ाबां नूं, कर साफ दिले देख़वाबां नूं।
गल्ल एसे घर विच ढुकदी, इक नुकते विच गल्ल मुकदी।
ऐवें मत्था जिमीं घसाईदा, लंमा पा महराब दिखाईदा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पढ़ कलमा लोक हसाई दा, दिल अंदर समझ न लिआईंदा।
कदी बात सच्ची वी लुकदी, इक नुकते विच गल्ल मुकदी।
कई हाजी बण बण आए जी, गल नीले जामे पाए जी।
हज बेच टके लै खाए जी, भला एह गल्ल कीहनूं भाए जी।
कदी बात सच्ची वी लुकदी, इक नुकते विच गल्ल मुकदी।
इक जंगल बहरीं जांदे नीं, इक दाणा रोज़ लै खांदे नी।
बेसमझ वजूद थकांदे नी, घर आवण हो के मांदे नी।
एवें चिल्हयां विच जिंद सुकदी, इक नुकते विच गल्ल मुकदी।
फड़ मुरशद आबद ख़ुदाई हो, विच मस्ती बेपरवाही हो।
बेख़ाहश बेनवाई हो, विच दिल दे ख़ूब सफ़ाई हो।
बुल्ला बात सच्ची कदों रुकदी, एक नुकते विच गल्ल मुकदी।

इक रांझा मैनूं लोड़ीदा

इक रांझा मैंनूं लोड़ीदा।
कुन फयकूनों अग्गे दीआं लगीआं,
नेहों न लगड़ा चोरी दा, आप छिड़ जांदा नाल मज्झीं दे।
सानूं क्यों बेलयों मोड़ीदा। इक रांझा मैंनूं लोड़ीदा।
रांझे जेहा मैनूं होर न कोई, मिनतां कर कर मोड़ीदा।
माण वालियां दे नैण सलोने, सूहा दुपट्टा गोरी दा।
अहद अहमद विच फरक न बुल्लया
इक रत्ती भेत मरोड़ी दा। इक रांझा मैंनूं लोड़ीदा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इल्मों बस करीं ओ यार

इल्मों बस करीं ओ यार।
इल्म न आवे विच शुमार, इक्को अलफ़ तेरे दरकार।
जांदी उमर नहीं इतबार, इल्मों बस करीं ओ यार।
पढ़ पढ़ इल्म लगावें ढेर, कुरान किताबां चार चुफेर।
गिरदे चानण विच अनेर, बाझों रहबर ख़बर न सार।
पढ़ पढ़ शेख़ मशाइख़ होया, भर भर लेट नींदर भर सोया।
जांदी वारी नैण भर रोया, डुब्बा विच उरार न पार।
पढ़ पढ़ इल्म होया बौराना, बे इल्मां नूं लुट लूट खाना।
एह की कीता यार बहाना, करें नाहीं कदे इनकार।
पढ़ पढ़ नफ़ल नमाज़ गुज़ारें, उच्चियां बांगां चांघां मारें।
मंबर चढ़ के वाअज़ पुकारें, तैनूं कीता हिरस खुआर।
पढ़ पढ़ मुल्लां होय काज़ी, अल्लाह इल्मां बाझों राज़ी।
होवे हिरस दिनों दिन ताज़ी, नफ़ा नीअत विच गुज़ार।
पढ़ पढ़ मसले रोज़ सुणावें, खाना शक शुबह दा खावें।
दस्सें होर ते होर कमावें, अंदर खोट बाहर सचयार।
पढ़ पढ़ इल्म नजूम विचारें, गिणदा रासां बुरज सतारे।
पढ़े अज़ीमतां मंतर झाड़े, अबजद गिने तावीज़ शुमार।
इल्मों पए कज़ीए होर, अक्खीं वाले अन्ने कोर।
फड़े साध ते छड्डे चोर, दोहीं जहानीं होया खुआर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इल्मों पए हज़ारां फस्ते, राही अटकरहे विच रस्ते।
मारया हिजर होए दिल खस्ते, पेआ विछोड़े दा सिर भार।
इलमों मीआं जी कहावें, तंबा चुक चुक मण्डी जावें।
धेला लै के छुरी चलावें, नाल कसाईयां बहुत प्यार।

बहुता इल्म अज़ाज़ील ने पढ़या,
झुग्गा झाहा ओसे दा सड़या।
गल विच तौक लाअनत दा पड़या,
आखिर गया ओह बाजी हार।

जद मैं सबक इश्क दा पड़या, दरया वेख वहदत दा वड़या।
घुंमण घेरां दे विच अड़या, शाह इनाइत लाया पार।
बुल्ला न राफ़ज़ी है न सुंनी, आलम फ़ाज़ल न आलम जुंनी।
इक्को पढ़या इल्म लदूंनी, वाहद अलिफ़ मीम दरकार।

इश्क़ असां नाल केही कीती

इश्क़ असां नाल केही कीती, लोक मरेंदे ताअने।
दिल दी वेदन कोई न जाणे, अन्दर देस बगाने।
जिस नूं चाट अमर दी होवे, सोई अमर पछाणे।
एस इश्क दी औखी घाटी, जो चढ़या सो जाणे।
आतश इश्क फ़राक तेरे ने, पल विच साड़ विखाईयां।
एस इश्क दे साड़े कोलों, जग विच देआं दुहाईआं।
जिस तन लग्गे सो तन जाणे, दूजा कोई न जाणे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं अनजाणी नेहों की जाणां, जाणे सुध्घड़ सयाणी।
एस माही दे सदके जावां, जिस दा कोई न सानी।
रूप सरूप अनूप है उसदा, शाला जवानी माणे।
हिजर तेरे ने झल्ली करके, कमली नाम धराया।
सुमुन बुकमुन ़उमयुन होके, आपणा वकत लंघाया।
कर हुण नज़र करम दी साईआं, न कर ज़ोर धगाने।
हस्स बुलौणा तेरा जानी, याद करां हर वेले।
पल पल दे विच हिजर दी पीड़ों, इश्क मरेंदा धेले।
रो रो याद करां दिन रातीं, पिछले वकत विहाणे।
इश्क तेरा दरकार असानूं, हर वेले हर हीले।
पाक रसूल मुहम्मद सरवर, मेरे ख़ास वसीले।
बुल्लेशाह जे मिले प्यारा, लख करां शुकराने।
इश्क असां नाल केही कीती, लोक मरेंदे ताने।

इश्क़ दी नवियों नवीं बहार

इश्क दी नवियों नवीं बहार।
जां मैं सबक इश्क दा पढ़या, मसजद कोलों जीउड़ा डरया।
डेरे जा ठाकर दे वड़या, जित्थे वजदे नाद हज़ार।
जां मैं रमज़ इश्क दी पाई, मैना तोता मार गवाई।
अंदर बाहर होई सफ़ाई, जित वल वेखां यारो यार।
हीर रांझे दे हो गए मेले, भुल्ली हीर ढूंडेंदी बेले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रांझा यार बुक्कल विच खेले, मैंनूं सुध बुध रही न सार।
बेद कुरानां पढ़ पढ़ थक्के, सजदे करदयां घस गए मत्थे।
न रब्ब तीरथ न रब्ब मक्के, जिस पाया तिस नूर अनवार।
फूक मुसल्ला भंन सुट लोटा, न फड़ तसबी कासा सोटा।
आशिक कैहन्दे दे दे होका, तरक हलालों खाह मुरदार।
उमर गवाई विच मसीती, अन्दर भरया नाल पलीती।
कदे नमाज़ तौहीद न कीती, हुण की करनां एं शोर पुकार।
इश्क़ भुलाया सजदा तेरा, हुण क्यों एवें पावें झेड़ा।
बुल्ला हुंदा चुप बथेरा, इश्क़ करेंदा मारो मार।
इश्क़ दी नवियों नवीं बहार।

एह अचरज साधो कौण लखावे

एह अचरज साधो कौण लखावे, छिन छिन रूप किते बण आवे।
मक्का लंका सहदेव के, भेद दोऊ को एक बतावे॥
जब जोगी तुम वसल करोगे, बांग कहे भावें नाद वजावे।
भगती भगत नतारो नाहीं, भगत सोई जेहड़ा मन भावे।
हर परगट परगट ही देखो, क्या पंडत फिर बेद सुनावे।
ध्यान धरो एह काफ़र नाहीं, क्या हिंदू क्या तुरक कहावे।
जब देखूं तब ओही ओही, बुल्ला शौह हर रंग समावे।
एह अचरज साधो कौण कहावे, छिन छिन रूप किते बण आवे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एह दुख जा कहूं किस आगे

एह दुःख जा कहूं किस आगे, रोम रोम घा प्रेम के लागे।
सिकत सिकत है रैण विहाणी, हमरे पिया ने पीड़ न जाणी।
बिलकत बिलकत रैण विहासी, हासे दी गल्ल पै गई फासी।
इक मरना दूजा जग दी हांसी, करत करत नित मोही रे मोही।
कौण करे मोहे से दिलजोई, शाम पिया मैं देती तूं थरोई।
दुख जग के मोहे पूछन आए, जिन के पिया परदेश सिधाए।
न पिया आए न पिया आए, एह दुख जा कहूं किस जाए।
बुल्ला शाह घर आ प्यारया, इक घड़ी के करन गुज़ारया।
एह दुख जा कहूं किस आगे, रोम रोम घा प्रेम के लागे।

उठ जाग घुराड़े मार नहीं

उठ जाग घुराड़े मार नहीं, एह सौण तेरे दरकार नहीं।
इक रोज़ जहानो जाणा ए, जा कबरे विच समाणा ए।
तेरा ग़ोशत कीड़यां खाणा ए, कर चेता मरग विसार नहीं।
तेरा साहा नेड़े आया ए, कुझ चोली दाज रंगाया ए।
क्यों आपणा आप वंजाया ए, ऐ ग़ाफिल तैनूं सार नहीं।
तूं सुत्तयां उमर वंजाई ए, तूं चरखे तंद न पाई ए।
की करसैं दाज तैयार नहीं, उठ जाग घुराड़े मार नहीं।
तूं जिस दिन जोबन मत्ती सैं, तूं नाल सईआं दे रत्ती सैं।
हो ग़ाफ़िल गल्लीं वत्ती सैं, एह भोरा तैनूं सार नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तूं मूढ्ढों बहुत कुचज्जी सैं, निरलज्जयां दी निरलज्जी सैं।
तूं खा खा खाणे रज्जी सैं, हुण ताईं तेरा बार नहीं।
अज कल तेरा मुकलावा ए, क्यों सुत्ती कर कर दावा ए।
कोई मार न बैठे ठाणा, लशकर दा जिन्हां शुमार नहीं।
फुल्लां फुल चंमेली लाला, सोसन सिंबल सरू निराला।
बादे-ख़िज़ां कीता बुरहाला, नगत नित ख़ुमार नहीं।
जो कुझ करसैं सो कुझ पासैं, नहीं ते ओड़क पछोतासैं।
सुंझी कूंज वांग कुरलासैं, खम्भां बाझ उडार नहीं।
डेरा करसें ओहनी जाईं, जित्थे शेर पलंग बलाईं।
ख़ाली रहसण महल सराईं, फिर तूं विरसेदार नहीं।
असीं आजज़ विच कोट इल्म दे, ओसे आंदे विच कलम दे।
बिन कलमे दे नाहीं कंम दे, बाझों कलमे यार नहीं।
बुल्ला शौह बिन कोई नाहीं, एथे ओथे दोहीं सराईं।
संभल संभल के कदम टिकाईं, फिर आवण दूजी वार नहीं।

उलटे होर ज़माने आए

उलटे होर जमाने आए, तां मैं भेद सज्जण दे पाए।
कां लगड़ां नूं मारन लग्गे, चिड़ियां जुरे ढाए।
घोड़े चुगण अरूड़ीआं ते, गद्दों खवेद पवाए।
आपणयां विच उलफ़त नाहीं, क्या चाचे क्या ताए।
प्यो पुत्तरां इतफ़ाक न काई, धीआं नाल न माए।
सच्चयां नूं पए मिलदे धक्के, झूठे कोल बहाए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अगले हो कंगाले बैठे, पिछलयाँ फ़रश विछाए।
भूरीआं वाले राजे कीते, राजयां भीख मंगाए।
बुल्लया हुकुम हजूरों आया, तिस नूँ कौण हटाए।
उलटे होर ज़माने आए, तां मैं भेद सज्जण दे पाए।

ऐसा जगया ज्ञान पलीता

ऐसा जगया ज्ञान पलीता।
न हम हिंदू न तुरक ज़रूरी, नाम इश्क़ दी है मनज़ूरी।
आशिक़ ने हर जीता, ऐसा जगया ज्ञान पलीता।
वेखो ठग्गां शोर मचाया, जंमणा मरणा चा बणाया।
मूरख भुल्ले रौला पाया, जिस नूं आशिक़ ज़ाहर कीता।
ऐसा जगया ज्ञान पलीता, बुल्ला आशिक़ दी बात न्यारी।
प्रेम वालयां बड़ी करारी, मूरख दी मत ऐवें मारी।
वाक सुख़न चुप कीता, ऐसा जगया ज्ञान पलीता।

कत्त कुड़े न वत्त कुड़े

कत्त कुड़े न वत्त कुड़े, छल्ली लाह भड़ोले घत्त कुड़े।
जे पूणी पूणी कत्तेंगी, तां नंगी मूल न वत्तेंगी।
सौहरयां दे जे कत्तेंगी, तां काग मारेगा झुट कुड़े।
विच्च गफ़लत जे तैं दिन जाले, कत्त के कुझ न लयो संभाले।
बाझों गुण शौह आपणे नाले, तेरी क्यों कर होसी गत्त कुड़े।
मां प्यो तेरे गंढीं पाइयां, अजे ना तैनूं सुरतां आयां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिन थोड़े ते चाअ मुकाईआं, न आसें पेके वत्त कुड़े।
जे दाज विहूणी जावेंगी, तां किसे भली न भावेंगी।
ओथे शौह नूं किवें रीझावेंगी, कुझ लै फ़करां दी मत्त कुड़े।
तेरे नाल दीआं दाज रंगाए नी, ओहनां सूहे सालू पाए नी।
तूं पैर उलटे क्यों चाए नी, जा ओथे लग्गी तत्त कुड़े।
बुल्ला शौह घर आपणे आवे, चूड़ा बीड़ा सब सुहावे।
गुण होसी तां गले लावे, नहीं रोसें नैनीं रत्त कुड़े।

कदी आ मिल बिरहों सताई नूं

कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।
इश्क़ लग्गे तां है है कूकें, तूं की जाणे पीड़ पराई नूं।
कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।
जे कोई इश्क़ विहाजया लोड़े।
सिर देवे पहले साईं नूं। कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।
अमलां वालियां लंघ लंघ गइयां, साडियां लज्जां माही नूं।
कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।
ग़म दे वहण सितम दीआं कांगां,
किसे कहर कप्पर विच पाई नूं।
कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।
मां प्यो छड सइयां मैं भल्ली आं,
बलहारी राम दुहाई नूं। कदी आ मिल बिरहों सताई नूं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कदी आ मिल यार प्यारया

कदी आ मिल यार प्यारया, तेरियां वाटां तों सिर वारया।
चढ़ बागीं कोयल कूकदी, नित सोज़-अलम दे फूकदी।
मैनूं ततड़ी को शाम विसारया, कदी आ मिल यार प्यारया।
बुल्ला शौह कदी घर आवसी, मेरी बलदी भा बुझावसी।
ओह्दी वाटां तो सिर वारया, कदी आ मिल यार प्यारया।
तेरियां वाटां तों सिर वारया, कदी आ मिल यार प्यारया।

कर कत्तण वल्ल ध्यान कुड़े

कर कत्तण वल्ल ध्यान कुड़े।
नित मत्तीं देंदी मां धीआ, क्यों फिरनी एं एवें आ धीआ।
नी शरम हया न गवा धीआ, कूं कदी तां समझ नदान कुड़े।
नहिंयों कदर मेहनत दा पाया, जद होया कंम असान कुड़े।
चरखा मुफ़त तेरे हत्थ आया, पलयों नहिंओं कुछ गवाया।
चरखा बणाया खातर तेरी, खेडण दी कर हिरस थेरेड़ी।
होना नहिंयों होर वडेरी, मत कर कोई अज्ञान कुड़े।
चरखा तेरा रंग रंगीला, रीस करेंदा सब कबीला।
चलदे चारे कर लै हीला, हो घर दे विच अवादान कुड़े।
इस चरखे दी कीमत भारी, तूं की जाणें कदर गवारी।
उच्ची नज़र फिरे हंकारी, विच आपणी शान गुमान कुड़े।
मैं कूकां कर खलीआं बाहीं, न हो ग़ाफ़िल समझ कदाईं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसा चरखा घड़ना नाहीं, फेर किसे तरखाण कुड़े।
एह चरखा तूं क्यों गँवाया, क्यों तूं खेह दे विच रुलाया।
जद दा हत्थ तेरे एह आया, तूं कदे न डाह्या आण कुणे।
नित मत्तीं दयां वलल्ली नूं, इस भोली कमली झल्ली नूं।
जद पवेगा वख़त इकल्ली नूं, तद हाय करसी जान कुड़े।
मुड्ढों दी तूं रिजक विहूणी, गोहड़यों न तूं कत्ती पूणी।
हुण क्यों फिरनी एं निंमोझूणी, किस दा करें गुमान कुड़े।
न तकला रास करावें तूं, न बायड़ माल्ह पवावें तूं।
घड़ी मुड़ी क्यों चरखा चावें तूं, करनी एं आपणा ज़यान कुड़े।
डिंगा तकला रास करा लै, नाल शताबी बायड़ पवा लै।
ज्यों कर वगे तिवें वगा लै, मत कर कोई अज्ञान कुड़े।
अज्ज घर विच नवीं कपाह कुड़े, तूं झंब वेलणा डाह कुड़े।
रूं वेल पंजावण जाह कुड़े, मुड़ कल न तेरा जाण कुड़े।
जद रूं पंजा लिआवेंगी, सईयां विच पूणीयां पावेंगी।
मुड़ आपे ही पई भावेंगी, विच सारे जग जहान कुड़े।
तेरे नाल दीआं सभ सईयां नी, कत पूणीयां सभनां लईआं नी।
तैनूँ बैठी नूं पिच्छे पईआं नी, क्यों बैठी हुण हैरान कुड़े।
दीवा आपणे पास जगावीं, कत्त कत्त सूत भड़ोली पावीं।
अक्खीं विच्चों रात लंघावीं, औख करके जान कुड़े।
राज पेका दिन चार कुड़े, न खेडो खेड गुज़ार कुड़े।
न हो वेहली कर कार कुड़े, घर बार न कर वीरान कुड़े।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तूं सुत्तयां रैण गुज़ार नहीं, मुड़ आणा दूजी वार नहीं।
फिर बैहूणा एस भंडार नहीं, विच इक्को जेडे हाण कुड़े।
तूं सदा न पेके रैहूणा एं, न पास अंबड़ी दे बैहणा ए।
भा अंत बिछोड़ा सैहूणा ए, वस्स पएंगी सस्स ननाण कुड़े।
कत्त लै नी कुझ कता लै नी, हुण ताणी तंद उणा लै नी।
तूं आपणा दाज रंगा लै नी, तूं तद होवें परधान कुड़े।
जद घर बेगाने जावेंगी, मुड़ वत्त न ओथों आवेंगी।
ओथे जा के पछोतावेंगी; कुझ अगदों कर समयान कुड़े।
अजे ऐडा तेरा कंम कुड़े, क्यों होई एं बे-ग़म कुड़े।
की कर लैणा उस दम कुड़े, जद घर आए महमान कुड़े।
जब सब सईयां टुर जाणगीआं, फिर ओथों मूल न आणगीआं।
आ चरखे मूल न डाह्णगीआं, तेरा त्रिंञण पया वीरान कुड़े।
कर माण न हुसन जवानी दा, परदेस न रैहूण सीलानी दा।
कोई दुनिया झूठी फ़ानी दा, न रहसी नाम निशान कुड़े।
इक औखा वेला आवेगा, सब साक सैण भज जावेगा।
कर मदद पार लंघावेगा, ओह बुल्ले दा सुल्तान कुड़े।

की करदा नी की करदा नी

की करदा नी की करदा नी, कोई पुच्छो खां दिलबर की करदा।
इकसे घर विच वसदयां रसदयां, नहीं हुंदा विच परदा।
विच मसीत नमाज गुज़ारे, बुत्तखाने जा वड़दा।
आप इक्को कई लक्ख घरां दे, मालक सब घर घर दा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिस वल वेखां उत वल ओहो, हर दी संगत करदा।
मूसा ते फ़रऔन बणा के, दो हो के क्यों लड़दा।
हाज़र नाज़र ओही हर थां, चूचक किस नूं खड़दा।
ऐसी नाज़ुक बात क्यों कैहन्दा, न कह सकदा न जरदा।
बुल्ला शौह दा इश्क़ बघेला, रत्त पींदा गोशत चरदा।
कोई पुच्छो खां दिलबर की करदा।

की जाणां मैं कोई वे अड़या

की जाणां मैं कोई वे अड़या, की जाणां मैं कोई।
जो कोई अंदर बोले चाले, जात असाडी सोई।
जिस दे नाल मैं नेहों लगाया, ओहो जेही होई।
चिट्टी चादर लाह सूट कुड़ीए, पहन फ़कीरां दी लोई।
चिट्टी चादर नूँ दाग़ लगेगा, लोई नूं दाग़ न कोई।
अलिफ़ पछाता बे पछाती, ते तलावत होई।
सीन पछाता सीन पछाता, सादक साबर होई।
कू कू करदी कुमरी आही, गल विच तौक पयोई।
बस न करदी कू कू कोलों, कू कू अंदर मोई।
जो कुझ करसी अल्ला भाणा, क्यों कुझ करसी कोई।
जो कुझ लेख मत्थे दा लिखया, मैं उस ते शाकर होई।
आशिक़ बकरी माशूक कसाई, मैं मैं करदी कोही।
ज्यों ज्यों मैं मैं बहुता करदी, त्यों त्यों मोई मोई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुल्ला शाह इनाइत करके, शौक शराब दित्तोई।
भला होया असीं दूरों छुट्टे, नेड़े आण लधोई।

की बेदरदां संग यारी

की बेदर्दां संग यारी, रोवण अक्खियां ज़ारो ज़ारी।
सानूं गए बेदर्दी छड्ड के, हिजरे सांग सीने विच गड के।
जिस्मों जिंद नूँ लै गए कढ के, एह गल्ल कर गए हैंसयारी।
बेदर्दां दा की भरवासा, ख़ौफ़ नहीं दिल अंदर मासा।
चिड़िया मौत गवारां हासा, मगरों हस हस ताड़ी मारी।
आवण कह गए फेर न आए, आवण ते सभ कौल भुलाए।
मैं भुल्ली भुल्ल नैण लगाए, केहे मिले सानूं ठग बपारी।
बुल्ले शाह इक सौदा कीता, पीता ज़हर प्याला पीता।
न कुझ नफ़ा न टोटा लीता, दर्द दुक्खां दी गठड़ी भारी।
की बेदर्दां संग यारी, रोवण अक्खियां ज़ारो ज़ारी।

कीहनूं ला-मकानी दसदे हो

कीहनूं ला-मकानी दसदे हो, तुसीं हर रंग दे विच वसदे हो।
कुनफ़यीकून तैं आप कहाया, तैं बाझों होर केहड़ा आया।
इश्कों सभ ज़हूर बणाया, आशिक़ हो के वसदे हो।
पुच्छो आदम किस ने आंदा ए, कित्थों आया कित्थे जांदा ए।
ओथे किस दा तैनूँ लाहजा ए, ओत्थे खा दाणा उठ नसदे हो।
आपे सुणें ते आप सुणावें, आपे गावें आप बजावें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हत्थों कौल सरोद सुणावें, किते जाहल हो के नसदे हो।
तेरी वहदत तूएं पुचावें, अनलहक दी तार हिलावें।
सूली ते मनसूर चढ़ावें, ओथे कोल खलो के हसदे हो।
जिवें सिकंदर तरफ़ नौसाबां, हो रसूल लै आया किताबां।
यूसफ़ हो के अंदर खुआबां, ज़ुलेख़ा दा दिल खसदे हो।
किते रूमी हो किते जंगी हो, किते टोपी-पोश फ़रंगी हो।
किते मैंखाने विच भंगी हो, किते मेहर मैहरी बण वसदे हो?
बुल्ला शौह इनाइत आरफ़ है, ओह दिल मेरे दा वारस है।
मैं लोहा ते ओह पारस है, तुसीं ओसे दे संग घसदे हो।

केहे लारे देना एं सानू

केहे लारे देना एं सानूं, दो घड़ियां मिल जाईं।
नेड़े वस्सें थां न दस्सें, ढूंडां कित वल जाहीं।
आपे झाती पाई अहमद, वेखां तां मुड़ नाहीं।
आख गयों मुड़ आयों नाहीं, सीने दे विच भड़कण भाईं।
इकसे घर विच वसदयां रसदयां, कित वल कूक सुणाईं।
पांधी जा मेरा देह सुनेहा, दिल दे ओह्ले लुकदा केहा।
नाम अल्ला दे न हो वैरी, मुख वेखन नूं न तरसाईं।
बुल्ला शौह की लाया मैनूं, रात अद्धी है तेरी मैहमा।
औझड़ बेले सभ कोई डरदा, शौह ढूंडां मैं चाईं चाईं।
केहे लारे देना एं सानूं, दो घड़ियां मिल जाईं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुर जो चाहे सो करदा ए

गुर जो चाहे सो करदा ए।
मेरे घर विच चोरी होई, सुत्ती रही न जागया कोई।
मैं गुर फड़ सोझी होई, जो माल गया सो तरदा ए।
पहले मख़फ़ी आप ख़ज़ाना सी, ओथे हैरत हैरतख़ाना सी।
फिर वहदत दे विच आणा सी, कुल जुदा मुज्मल परदा ए।
कुनफ़यीकून आवाज़ा देंदा, वहदत विच्चों कसरत लैंदा।
पहन लिबास बंदा बण बैहन्दा, कर बंदगी मसजद वड़दा ए।
रोज़ेमीसाक अलस्त सुणावे, कालूबला अशहद न चाहवे।
फिर कुझ अपणा आप छुपावे, ओह गिण वसतां धरदा ए।
गुर अल्ला आप कहेंदा ए, गुर वली नबी हो बैहन्दा ए।
हर हर दे दिल विच रैहन्दा ए, ओह खाली भांडे भरदा ए।
बुल्ला शौह नूं घर विच पाया, जिस सांगी ने सांग बनाया।
लोकां कोलों भेत छुपाया, ओह दरस पिरम दा पढ़दा ए।

घड़याली देओ निकाल नी

घड़याली देओ निकाल नी, अज्ज पी घर आया लाल नी।
घड़ी घड़ी घड़याल बजावे, रैण वसल दी पया घटावे।
मेरे मन दी बात जे पावे, हत्थों चा सट्टे घड़याल नी।
अनहद वाजा वज्जे सुहाना, मुतरिब सुघड़ां तान तराना।
नमाज़ रोज़ा भुल गया दुगाना, मध प्याला देण कलाल नी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुख वेखण दा अजब नज़ारा, दुक्ख दिले दा उठ गया सारा।
रैन वथे कुझ करो पसारा, दिन अग्गे धरो दीवाल नी।
मैनूं आपणी खबर न काई, क्या जाणां मैं कित व्याही।
एह गल्ल क्योंकर छपे छपाई, हुण होया फ़ज़ल कमाल नी।
टूणे कामन करे बथेरे, सेहरे आए वड वडेरे।
हुण घर आया जानी मेरे, रहां लक्ख वरे एहदे नाल नी।
बुल्ला शाह दी सेज प्यारी, नी मैं तारनहारे तारी।
किवें किवें हुण आई वारी, हुण विछड़न होया मुहाल नी।

घर में गंगा आई संतो

घर में गंगा आई संतो, घर में गंगा आई।
आपे मुरली आपे घनइया आपे जादू राई।
आप गोबरीआ आप गडरिया आपे देत दिखाई।
अनहद द्वार का आया गवरीआ कंगन दस्त चढ़ाई।
मूंड मुंडा मोहे प्रीती को रेन कंनां में पाई।
अमृत फल खा लिओ रे गोसाईं थोड़ी करो बडाई।
घर में गंगा आई संतो, घर में गंगा आई।

घुंघट चुक ओर सज्जणां वे

घुंघट चुक ओ सज्जणा वे, हुण शरमां काहनूं रखीआं वे।
जुलफ़ कुंडल दा घेरा पाया, बिसीअर हो के डंग चलाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेख असां वल तरस न आया, कर के खूनी अक्खिआं वे।
घुंघट चुक ओ सज्जणा वे, हुण शरमां काहनूं रखीआं वे।
दो नैणां दा तीर चलाया, मैं आजज़ दे सीने लाया।
घायल कर के मुख छुपाया, चोरियां एह किन दस्सीआं वे।
घुंघट चुक ओ सज्जणां वे, हुण शरमां काहनूं रखीआं वे।
बिरहों कटारी तूं कस के मारी, तद मैं होई बेदिल भारी।
मुड़ न लई तैं सार हमारी, पत्तियां तेरियां कच्चीआं वे।
घुंघट चुक ओ सज्जणां वे, हुण शरमां काहनूं रखीआं वे।
नेहों लगा के मन हर लीता, फेर न अपणा दर्शन दीता।
ज़हर प्याला मैं आपे पीता, अकलों सी मैं कच्चीआं वे।
घुंघट चुक ओ सज्जणां वे, हुण शरमां काहनूं रखीआं वे।
शाह इनायत मुक्खों न बोलां, सूरत तेरी हर दिल टोलां।

जिचर न इश्क़-मजाज़ी लागे

जिचर न इश्क़-मजाज़ी लागे, सूई सीवे न बिन धागे।
इश्क़ मजाज़ी दाता है, जिस पिच्छे मस्त हो जाता है।
इश्क़ जिन्हां दी हड्डी पैंदा, सोई नर जीवित मर जांदा।
इश्क़ पिता ते माता ए, जिस पिच्छे मस्त हो जाता ए।
आशिक़ दा तन सुकदा जाए, मैं खड़ी चंद पिर के साए।
वेख माशूकां खिड़ खिड़ हासे, इश्क़ बेताल पढ़ाता है।
जिस ते इश्क़ एह आया है, ओह बेबस कर दिखलाया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नशा रोम रोम में आया है, इस विच न रत्ती ओह्ला है।
हर तरफ़ दसेंदा मौला है, बुल्ला आशिक़ वी हुण तरदा है।
जिस फ़िक्कर पिया दे घर दा है, रब्ब मिलदा वेख उधरता है।
मन अंदर होया झाता है, जिस पिच्छे मस्त हो जाता है।

जिस तन लगया इश्क़ कमाल

जिस तन लगया इश्क़ कमाल, नाचे बेसुर ते बेताल।
दर्दमंदां नूं कोई न छेड़े, जिसने आपे दुक्ख सहेड़े।
जंमणा जिऊणां मूल उखेड़े, बूझे अपना आप ख़याल।
जिस तन लगया इश्क़ कमाल, नाचे बेसुर ते बेताल।
जिस ने वेस इश्क़ दा कीता, धुर दरबारों फ़तवा लीता।
जदों हजूरों प्याला पीता, कुझ न रिहा सवाल जवाब।
जिस तन लगया इश्क़ कमाल, नाचे बेसुर ते बेताल।
जिसदे अंदर वसया यार, उठया यारो यार पुकार।
न ओह चाहे राग न तार, ऐवें बैठा खेडे हाल।
जिस तन लगया इश्क़ कमाल, नाचे बेसुर ते बेताल।
बुल्लया शौह नगर सच पाया, झूठा रौला सब मुकाया।
सच्चयां कारन सच्च सुणाया, पाया उसदा पाक जमाल।
जिस तन लगया इश्क़ कमाल, नाचे बेसुर ते बेताल।

जो रंग रंगया गूढ़ा रंगया

जो रंग रंगया गूढ़ा रंगया, मुर्शिद वाली लाली ओ यार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आहद विच्चो अहमद होया, विच्चों मीम निकाली ओ यार।
दूर मुआनी दी धूम मची है, नैणां तों घुंड उठालीं ओ यार।
सूराह यासीन मुज़म्मल वाला, बदलां गरज संभाली ओ यार।
जुलफ़ स्याह विच यद बेज़ा, दे चमकार विखाली ओ यार।
मूतू कबलंता मूतू होया, मोयां नूं फेर जवाली ओ यार।
बुल्ला शौह मेरे घर आया, कर कर नाच वखाली ओ यार।

टूक बूझ कौण छप आया ए

टूक बूझ कौण छप आया ए, किसे भेखी भेख वटाया ए।
जिस ना दर्द दी बात कही, उस प्रेम नगर ना झात पई।
ओह डुब मोई सभ घात गई, उस क्यों चंदरी ने जाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए।
मानिंद पलास बणायो ई, मेरी सूरत चा लखायो ई।
मुख काला कर दिखलायो ई, क्या स्याही रंग लखाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए।
इक रब्ब दा ना ख़ज़ाना ए, संग चोरां यारां दानां ए।
ओह रहमत दा खसमाना ए, संग खौफ़ रकीब बनाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए।
दूई दूर करो कोई शोर नहीं, एह तुरक हिंदू कोई होर नहीं।
सब साध कहो कोई चोर नहीं, हर घट विच आप समाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐवें किस्से काहनूं घड़ना एं, ते गुलसतां, बोसतां पढ़ना एं।
एवें बेमूजब क्यों लड़ना एं, किस उलटा वेद पढ़ाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए

शरीअत साडी दाई ए, तरीकत साडी माई ए।
अग्गों हक हकीकत आई ए, अते मारफ़तों कुझ पाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए

है विरली बात बतावण दी, तुसीं समझो दिल ते लावण दी।
कोई गत्त दस्सो इस बावण दी, एह काहनूं भेद बणाया ए।
एक पढ़ना इल्म ज़रूर होया, पर दसना न मंजूर होया।
जिस दस्सया सो मनसूर होया, उस सूली पकड़ चढ़ाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए

मैं न कसब न फ़िकर तमीज़ कीता, दुख तन आरफ़ कीता।
कर जुहद किताब मजीद कीता, किसे बे मेहनत न पाया ए।
इस दुख से किचरक भागेंगा, रहें सुता कद तूं जागेंगा।
फेर उठदा रोवण लागेंगा, किसे गफ़लत मार सुलाया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए

ग़ैन ऐन दी सूरत ठहरा, इक नुकते दा है फ़रक पड़ा।
जो नुकता दिल थीं दूर करा, फिर ग़ैन वा ऐन जताया ए।
जेहड़ा मन विच लग्गा दूआ रे, एह कौण कहे मैं मूआ रे।
तन सभ इनायत हूआ रे, फिर बुल्ला नाम धराया ए।
टूक बूझ कौण छप आया ए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ढिलक गई मेरे चरखे दी हत्थी

ढिलक गई मेरे चरखे दी हत्थी, कत्तया मूल न जावे।
तकले नूं वल पै पै जांदे, कौण लुहार लयावे।
तकले तों वल लाहीं लुहारा, तंदी टुट टुट जावे।
घड़ी घड़ी एह झोले खांदा, छल्ली इक न लाह्वे।
पीता नहीं जो बीड़ी बन्हां, बायड़ हत्थ न आवे।
चमड़यां उत्ते चोपड़ नाही, माल्ह पई बरड़ावे।
दिन चढ़या कद गुजरे, मैनूं प्यारा मुख दिखलावे।
माही छिड़ गया नाल महीं दे, हुण कत्तण किस नूं भावे।
जित्त वल यार उते वल इक्खयां, मेरा दिल बेले वल धावे।
त्रिंजण कत्तण सद्दन सइयां, बिरहों ढोर बजावे।
अरज़ एहो मैनूं आण मिले हुण, कौण वसीला जावे।
सै मणां दा कत्त लेआ बुल्लया, मैनूं शौह गल लावे।

ढोला आदमी बण आया

ढोला आदमी बण आया।
आपे आहू आपे चीता, आपे मारन धाया।
आपे साहिब आपे बरदा, आपे मुल्ल विकाया।
कदी हाथी ते असवार होया, कदी ठूठा डांग भवाया।
कदी रावल जोगी भोगी हो के, सांगी सांग बणाया।
बाज़ीगर क्या बाज़ी खेली, मैनूं पुतली वांग नचाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं उस पड़ताली नचना हां, जिस गतमित यार लखाया।
हाबील काबील आदम दे जाए, आदम किस दा जाया।
बुल्ला ओन्हां तों वी अग्गों आहा, दादा गोद खिडाया।
ढोला आदमी बण आया।

तूहियों हैं मैं नाहीं वे सज्जणा

तूहियों हैं मैं नाहीं वे सज्जणा, तूहियों हैं मैं नाहीं।
खूहे दे परछावें वांगू, घुम रिहा मन माहीं।
जां बोलां तूं नाले बोलें, चुप्प रह्वां मन माहीं।
जे सौवां ते नाले सौवें, जे तुरां तूँ राहीं।
बुल्ला शौह घर आया मेरे, जिंदड़ी घोल घुमाईं।
तूहियों हैं मैं नाहीं वे सज्जणा, तूहियों हैं मैं नाहीं।

तेरे इश्क़ नचाइआं

तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइया थइया।
तेरे इश्क़ ने डेरा मेरे अंदर कीता।
भर के ज़हर प्याला मैं तां आपे पीता।
झबदे बहुड़ीं वे तबीबा नहीं ते मैं मर गइआं।
तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।
छुप गया वे सूरज बाहर रह गई आ लाली।
वे मैं सदके होवां देवें मुड़ जे वखाली।
पीरा मैं भुल गइआं तेरे नाल न गइआं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।
एस इश्के दे कोलों मैंनूं हटक न माए।
लाहू जांदड़े बेड़े केहड़ा मोड़ लिआवे।
मेरी अकल जो भुल्ली नाम मुहाणयां दे गइआं।
तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।
एस इश्के दे कोलों मैनूं हटक न माए।
लाहू जांदड़े बेड़े केहड़ा मोड़ लिआवे।
मेरी अकल जो भुल्ली नाल मुहाणयां दे गइआं।
तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।
एसे इश्के दी झंगी विच मोर बुलेंदा।
सानूं किबला ते काअबा सोहणा यार दखेंदा।
सानूं घायल करके फिर ख़बर न लइआ।
तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।
बुल्ला शौह ने आंदा मैनूं इनाइत दे बूहे।
जिस ने मैनूं पवाए चोले सावे ते सूहे।
जां मैं मारी है अड्डी मिल पया है वहीआ।
तेरे इश्क़ नचाइआं कर थइआ थइआ।

दिल लोचे माही यार नूं

दिल लोचे माही यार नूं।
इक हस गल्लां करदियां, इक रोंदियां धोंदियां मरदियां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहो फुल्ली बसंत बहार नूं, दिल लोचे माही यार नूं।
मैं न्हाती धोती रह गई, इक गंढ माही दिल बह गई।
भाह लाईए हार शिंगार नूं, दिल लोचे माही यार नूं।
मैं कमली कीती दूतियां, दुख घेर चुफेरों लीतियां।
घर आ माही दीदार नूं, दिल लोचे माही यार नूं।
बुल्ला शौह मेरे घर आया, मैं घुट रांझड़ गल लाया।
दुख गए समुंदर पार नूं, दिल लोचे माही यार नूं।

न जीवां महाराज

न जीवां महाराज, मैं तेरे बिण न जीवां।
इन्हां सुक्कयां फुल्लां विच बास नहीं।
परदेस गयां दी कोई आस नहीं।
जेहड़े साईं साजण साडे पास नहीं। न जीवां महाराज...
तूं की सुत्ता एं चादर ताण के।
सिर मौत खलोती तेरे आण के।
कोई अमल न कीता जाण के।
की मैं खट्टया तेरी हो के।
दोवें नैण गवाय रो के।
तेरा नाम लइए मुख धो के। न जीवां महाराज...
बुल्ले शौह बदेसों औंदा।
हत्थ कंगणा ते बाहीं लटकौंदा।
सिर सदका तेरे नाओं दा। न जीवां महाराज...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नी कुटीचल मेरा नां

नी कुटीचल मेरा नां।
मुल्लां मैनूं सबक पढ़ाया। अलफ़ों अग्गे कुझ न आया।
उस दीआं जुत्तियां खांदा सां, नी कुटीचल मेरा नां।
किवें किवें दो अक्खियां लाइयां, रलके सइआं मारन आइयां।
नाले मारे बाबल मां, नी कुटीचल मेरा नां।
साहवरे सानूं वड़न न देंदे, नानक दादक घरों कढेंदे।
मेरा पेके नहिओं थां, नी कुटीचल मेरा नां।
पढ़न सेती सब मारन आहीं, बिन पढ़यां हुण छड्डदा नाहीं।
नी मैं मुड़ के कित वल जां, नी कुटीचल मेरा नां।
बुल्ला शौह की लाई मैनूँ, मत कुझ लग्गे ओह ही तैनूं।
तद करेंगा तूं न्यां, नी कुटीचल मेरा नां।

मुझे तेरे दर्शन हो

पत्तियां लिखां मैं शाम नूं, मैंनूं पिया नज़र न आवे।
आंगन बणा डरौणा, कित बिधि रैण विहावे।
काग़ज़ करूं लिख दामने, नैण आंसू लाऊं।
बिरहों जारी हौं जरी, दिल फूक जलाऊं।
पांधे पंडत जगत के, मैं पूछ रही आं सारे।
पोथी बेद क्या दोस है, जो उलटे भाग हमारे।
भाइया वे जोतशिया, इंक सच्चीबात भी कहिओ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जे मैं हीणी भागदी, तुम चुप्प न रहिओ।
भज्ज सकां ते भज्ज जावां, सब तज के करां फ़कीरी।
पर दुलड़ी तुलड़ी, चौलड़ी, है गल विच प्रेम ज़ंजीरी।
नींद गई कित देश नूं, ओह भी वैरन मेरी।
मत सुपने विच मैं आण मिले, ओह नींदर केहड़ी।
रो रो जीउ वलाउंदीआं, गम करनीआं दूणा।
नैणों नीर भी न चल्लण, किसे कीता टूणा।
साजन तुमारी प्रीत से, मुझ को हाथ की आयां।
छतर सूलां सिर लाया, पर तेरा पंत न पाया।
प्रेम नगर चल वसीए, जित्थे वस्से कंत हमारा।
बुल्लया शौह तों मंगनी हां, जे दए नज़ारा।

भय से छुटकारा

प्यारे! बिन मसल्हत उठ जाणा, तूं कदी ते हो सयाणा।
कर लै चावड़ चार दिहाड़े, थीसें अंत निमाणा।
जुलम करें ते लोक सतावें, छड्ड दे लोक सताणा।
जिस जिस दा वी माण करें तूं, सो वी साथ न जाणा।
शहर-खामोशां नूं वेख हमेशा, जणा विच जग समाणा।
भर भर पूर लंघावे डाढा, मलकुन-मौत मुहाणा।
ऐथे हैन तनते सभ, मैं अवगुणहार निमाणा।
बुल्ला दुश्मन नाल बरे विच, है दुश्मन बल ढाणा।
महबूब-रबानी करे रसाई, खौफ़ जाए मलकाणा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिया पिया करते हमीं पिया होए

पिया पिया करते हमीं पिया होए, अब पिया किस नूं कहीए।
हिजर वसल हम दोनों छोड़े, अब किस के हो रहीए।
मजनूं लाल दीवाने वांगू, अब लैला हो रहीए।
बुल्ला शौह घर मेरे आए, अब क्यों ताअने सहीए।

बुल्ला की जाणे ज़ात इश्क़ दी कौण

बुल्ला की जाणे ज़ात इश्क़ दी कौण।
ना सूहां ना कंम बखेड़े, वंञे जागण सौण।
रांझे नूं मैं गालियां देवां, मन विच करां दुआईं।
मैं ते रांझा इक्को कोई, लोकां नूं अज़माईं।
जिस बेले विच बेली दिस्से, उस दीआं लवां बलाईं।
बुल्ला शौह नूं पासे छड्ड के, जंगल वल्ल न जाईं।
बुल्ला की जाणे ज़ात इश्क़ दी कौण।

सर्वव्यापक मालिक

बुल्ले नुं समझावण आइयां, भैणां ते भरजाइयां।
मंन लै बुल्लया कैहणा साडा, छड्ड दे पल्ला राइयां।
आल नबी औलाद अली नूं, तूं क्यों लीकां लाइयां।
जेहड़ा सानूं सैयद सद्दे, दोज़ख़ मिलण सज़ाइयां।
जो कोई सानूं राईं आखे, भिश्ती पीघां पाइयां।
राईं साईं सभनी थाईं, रब्ब दीआं बेपरवाहियां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहणियां परे हटाइयां, ते कोझियां लै गल लाइयां।
जे तूं लोड़ें बाग़ बहारां, चाकर हो जा राइयां।
बुल्लेशाह दी ज़ात की पुछमै, शाकर हो रज़ाइआं।

वह हर स्थान में

भरवासा की अशनाई दा, डर लगदा बेपरवाही दा।
इबराहीम चिखा विच पायो, सुलेमान तों भट्ठ झुकवाओ।
यूनस मच्छी तों निगलायो, फड़ यूसफ़ मिसर विकाईदा।
ज़करीआ सिर कलवत्तर चलायो, साबर दे तन कीड़े पायो।
सुंनआं गल जुन्नार पवायो, किते उलटा पोश लुहाईदा।
पैगंबर ते नूर उपायो, नाम इमाम हुसैन धरायो।
झूला जबराईल झुलायो, फिर प्यासा गला कटाईदा।
जा ज़करीआ रुक्ख छुपाया, छप्पना उस दा बुरा मनाया।
आरा सिर ते चा वगाया, सणे रुक्ख चराईदा।
यईहा उस दा यार कहाया, नाल ओसे दे नेहों लगाया।
राह शरहा दा उन्न बतलाया, सिर उस दा बाल कटाईदा।
बुल्ला शौह हुण सही संञाते हैं, हर सूरत नाल पछाते हैं।
किते आते हैं किते जाते हैं, हुण मैथों भूल न जाईदा।

प्रियतम से नेह

भावें जाण न जाण वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
मैं तेरे कुरबान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरे जेहां मैनूं होर न कोई, ढूंडां जंगल बेला रोही।
ढूंडां तां सारा जहान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
लोकां दे भाणे चाक महीं दा, रांझा तां लोकां विच कहीदा।
साडा तां दीन ईमान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
मापे छोड़ लग्गी लड़ तेरे, शाह इनाइत साईं मेरे।
लाइयां दी लज्ज पाल वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।

विरह व तड़प का रंग

भैणां मैं कतदी कतदी हुट्टी।
पछ्छी पड़ी पिछवाड़े रह गई, हत्थ विच रह गई जुट्टी।
अग्गे चरखा पिच्छे पीहड़ा, मेरे हत्थों तंद तरुट्टी।
भौंदा भौंदा ऊरा डिग्गा, चंब उलझी तंद टुट्टी।
भला होया मेरा चरखा टुट्टा, मेरी जिंद अज़ाबों छुट्टी।
दाज दहेज नूं उस की करना, जिस प्रेम कटोरी मुट्ठी।
बुल्ला शौह ने नाच नचाए, धुंम पई कड़ कुट्टी।

मन अटक्यो शाम सुंदर सों

मन अटक्यो शाम सुंदर सो।
कहूं वेखूं बाहमण कहूं शेखा, आप आप करन सभ लेखा।
क्या क्या खेलया हुनर सौं, मन अटक्यो शाम सुंदर सों।
सूझ पड़ी तब राम दुहाई, हम तुम एक न दूजा कोई।
इस प्रेम नगर के घर सों, मन अटक्यो शाम सुंदर सों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंडित कौण कित लिख सुणाए, न कहीं जाए न कहीं आए।
जैसे गुर का कंगण कर सों, मन अटक्यो शाम सुंदर सों।
बुल्ला शौह दी पैरीं पड़ीए, सीस काट कर अग्गे धरीए।
हुण मैं हर देखा हर हर सों, मन अटक्यो शाम सुंदर सों।

मुरली बाज उठी अणघातां

मुरली बाज उठी अणघातां, सुण के भुल्ल गइयां सभ बातां।
लग्ग गए अनहद बान न्यारे, झूठी दुनिया कूड़ पसारे।
साईं मुक्ख वेखण वणजारे, मैनूं भुल्ल गइयां सभ बातां।
हुण मैं चंचल मिरग फहाया, ओसे मैनूं बंन्ह बहाया।
सिरफ़ दुगाना इश्क़ पढ़ाया, रह गइयां त्रै चार रकातां।
बूहे आण खलोता यार, बाबल पुज्ज पेआ तकरार।
कलमे नाल जे रहे विहार, नबी मुहम्मद भरे सफातां।
बुल्ले शाह मैं हुण बरलाई, जद दी मुरली काहन बजाई।
बावरी हो तुसां वल धाई, खोजीआं कित वल दसत बरातां।

मेरी बुक्कल दे विच चोर

मेरी बुक्कल दे विच चोर नी, मेरी बुक्कल दे विच चोर।
कीहनूं कूक सुणावां नी, मेरी बुक्कल दे विच चोर।
चोरी चोरी निकल गया, जग विच पै गया शोर।
मुसलमान सड़ने तों डरदे, हिंदू डरदे गोर।
दोवें एसे दे विच मरदे, एहो दोहां दी खोर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किते रामदास किते फतह मुहम्मद, एहो कदीमी शोर।
मिट गया दोहां दा झगड़ा, निकल पेआ कुझ होर।
अरश-मनव्वर बागां मिलियां, सुणियां तख़त लाहौर।
शाह इनाइत कुंडीयां पाइयां, आपे खिचदा डोर।
जिस ढूंडया तिस ने पाया, न झुर झुर होया मोर।
पीर-पीरां बग़दाद आसाडा, मुरशद तख़त लाहौर।
एहो तुसीं वी आखो सारे, आप गुड्डी आप डोर।
मैं दसनां तुसीं पकड़ ल्याओ, बुल्ले शाह दा चोर।

मेरे घर आया पिया हमरा

मेरे घर आया पिया हमरा।
वाह वाह वाहदत कीना शोर, अनहद बांसरी दी घंघोर।
असां हुण पाया तख़त-लाहौर, मेरे घर आया पिया हमरा।
जल गए मेरे खोट निखोट, लग गई प्रेम सच्चे दी चोट।
हुण सानूं ओस ख़सम दी ओट, मेरे घर आया पिया हमरा।
हुण क्या कंने साल वसाल, लग गया मस्त प्याला हाथ।
हुण मेरी भूल गई ज़ात सफात, मेरे घर आया पिया हमरा।
हुण क्या कीने बीस पचास, प्रीतम पाई असां वल झात।
हुण सानूं सभ जग दिसदा लाल, मेरे घर आया पिया हमरा।
हुण सानूं आस दी फास, बुल्ला शौह आया हमरे पास।
साईं पुजाई साडी आस, मेरे घर आया पिया हमरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं क्योंकर जावां काअबे नूं

मैं क्योंकर जावां काअबे नूं, दिल लोचे तखत हज़ारे नूं।
लोकी सजदा काअबे नूं करदे, साडा सजदा यार प्यारे नूं।
औगुण वेख न भुल मीआं रांझा, याद करीं उस कारे नूं।
मैं अनतारू तरन न जाणां, शरम पई तुध तारे नूं।
तेरी सानी कोई नहीं मिलया, ढूंढ लिआ जग सारे नूं।
बुल्ला शौह दी प्रीत अनोखी तारे औगुणहारे नूं।

मैं कुसुंबड़ा चुण-चुण हारी

एस कुसुंबे दे कंडे भलेरे अड़ अड़ चुनड़ी पाड़ी।
एस कुसुंबे दा हाकम करड़ा ज़ालम ए पटवारी।
एस कुसुंबे दे चार मुकद्दम मुआमला मंगदे भारी।
होरनां चुगया फुहिया फुहिया मैं भर लई पटारी।
चुग चुग के मैं ढेरी कीता लत्थे आण बपारी।
औखी घाटी मुशकल पैंडा, सिर पर गठड़ी भारी।
अमलां वालीयां सभ लंघ गईआं, रह गई औगुणहारी।
सारी उमरा खेड गवाई ओड़क बाज़ी हारी।
अलसत केहा जद अक्खियां लाईआं, हुण क्यों यार विसारी।
इक्को घर विच वसदेआं रसदेआं, हुण क्यों रही न्यारी।
मैं कमीनी कुचज्जी, कोहजी, बेगुण कौन बिचारी।
बुल्ला शौह दे लायक नाहीं, शाह इनायत तारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं गल्ल ओथे दी करदा हां

मैं गल्ल ओते दी करदा हां, पर गल्ल करदा वी डरदा हां।
नाल रूहां दे लारा लाया, तुसीं चलों मैं नाले आया।
एथे परदा चा बाणाया, मैं भरम भुलाया फिरदा हां।
नाल हाकम दे खेल असाडी, जे मैं मीरी तां मैं फाडी।
धरी धराई पूंजी तुहाडी, मैं अगला लेखा भरदा हां।
दे पूंजी मूरख झुंजलाया, मगर चोरां दे पैड़ा लाया।
चोरां दी मैं पैड़ लयाया, हर शब धाड़े धड़दा हां।
ना नाल मेरे ओह रजदा ए, ना मिन्नत कीती सजदा ए।
जां मुड़ बैठां तां भजदा ए, मुड़ मिन्नतज़ारी करदा हां।
की सुख पाया मैं आण इत्थे, ना मंजल न डेरे जित्थे।
घंटा कूच सुणावां कित्थे, नित ऊठ कचावे कड़हा हां।
बुल्लेशाह बेअंत डूंघाई, दे जग बीच न लगदी काई।
उरार पार दी ख़बर न काई, मैं बे सिर पैरीं तरदा हां।
मैं गल्ल ओथे दी करदा हां, पर गल्ल करदा वी डरदा हां।

मैं चूहड़ेटड़ी आं

मैं चूहड़ेटड़ी आं सच्चे साहिब दी सरकारों।
ध्यान दी छज्जली ज्ञान का झाड़ू, काम क्रोद नित झाड़ों।
मैं चूहड़ेटड़ी आं सच्चे साहिब दी सरकारों।
काज़ी जाणे हाकम जाणे फ़ारग़खती बेगारों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिनेंरात मैं एहो मंगदी दूर न कर दरबारों।
तुद बाझों मेरा होर न कोई, कैं वल्ल करूं पुकारों।
बुल्ला शौह इनायत करके बखरा मिले दीदारो।

मैं पुच्छां शौह दीआं वाटां नी

मैं पुच्छां शौह दीआं वाटां नी, कोई करे असां नाल बातां नी।
भुल्ले रहे नाम न जपया, ग़फ़लत अंदर यार है छपया।
ओ सिध पुरखा तेरे अंदर थसया, लग्गियां नफ़स दीआं चाटां नी।
जप लै ना हो भोली भाली, मत तूं सद्दएं मुख मुकाली।
उलटी प्रेम नगर दी चाली, भड़कण इश्क़ दीआं लाटां नी।
भोली ना हो, हो सयाणी, इश्क़ नूर दा भर लै पानी।
इस दुनिया दी छोड़ कहाणी, एह यार मिलण दीआं घाता नी।
बुल्ला रब्ब बण बैठों आपे, तद दुनिया दे पए सयापे।
दूती वेहड़े दुश्मन मापे, सब कड़क पईआं आफ़ातां नी।

मैं वैसां जोगी दे नाल

मैं वैसां जोगी दे नाल मत्थे तिलक लगा के।
मैं वैसा न रहसां होड़े, कौण कोई मैं जांदी नू मोड़े।
मैनूं मुड़ना होया मुहाल, सिर ते मेहूणा चा के।
जोगी नहीं एह दिल दा मीता, भुल गई मैं प्यार न कीता।
मैनूं रही न कुझ संभाल, उस दा दर्शन पा के।
एस जोगी मैंनूं कहीआं लाइयां, हेठ कलेजे कुंडीआं पाईआं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इश्क़ दा पाया जाल, मिट्ठी बात सुणा के।
मैं जोगी नूं ख़ूब पछाता, लोकां मैंनूं कमली जाता।
लुट्टी झंग सयाल, कंनीं मुंदरां पा के।
जे जोगी घर आवे मेरे, मुक जावण सब झगड़े झेड़े।
लां सीने दे नाल, लक्ख लक्ख शगन मना के।
माए नी इक जोगी आया, दर साडे उस धूआं पाया।
मंगदा ही सयाल, बैठा भेस वटा के।
ताअने ना दे फुफ्फी ताई, एथे जोगी नूं किसमत लियाई।
हुण होया फ़ज़ल कमाल, आया है जोग सिधा के।
माही नहीं कोई नूर इलाही, अनहद दी जिस मुरली वाही।
मुठिओस सु हीर सयाल, डाहडे कामण पा के।
लक्खां गए हज़ारां आए, उस दे भेत किसे न पाए।
गल्लां तां मूसे नाल, पर कोह तूर चढ़ा के।
आबदा रसूल कहाया, विच मअराज बुराक मंगाया।
जबराईल पकड़ लै आया, हूरां मंगल गा के।
एस जोगी दे सुणो अखाड़े, हसन-हुसैन नबी दे प्यारे।
मारओस विच जद्दाल, पाणी बिन तरसा के।
एस जोगी दी सुणो कहाणी, सोहणी डुब्बी डूंघे पाणी।
फिर रलया महींवाल, सारा रख़त लुटा के।
डावां डोली लै चल्ले खेड़े, मुढ कदीमी दुश्मन जेहड़े।
रांझा तां होया नाल, सिर ते टंमक बचा के।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोगी नहीं कोई जादू साया, भर भर प्याला ज़ौक पलाया।
मैं पी पी होई निहाल, अंग बिभूत रमा के।
जोगी नाल करेंदे झेड़े, केहे पा बैठे काज़ी घेरे।
विच कैदो पाई मुकाल, कूड़ा दोष लगा के।
बुल्ला मैं जोगी नाल ब्याही, लोकां कमलयां खबर न काई।
मैं जोगी दा माल, पंजे पीर मना के।

वेखो नी शौह इनायत साईं

वेखो नी शौह इनायत साईं, मैं नाल करदा किवें अदाईं।
कदी आवे कदी आवे नाहीं, त्यों त्यों मैनूं भड़कण भाहीं।
नाम अल्ला पैग़ाम सुणाईं, मुख वेखण नूं न तरसाईं।
बुल्लै शौह केही लाई मैनूं, रात हनेरे उठ टुरदी नैं नूं।
जिस औकड़ तों सभ कोई डरदा, सो मैं ढूंडां चाईं चाईं।

सब इक्को रंग कपाहीं दा

सब इक्को रंग कपाहीं दा।
ताणी ताणा पेटा नलियां, पीठ नड़ा ते छब्बां छल्लियां।
आपो आपणे नाम जतावण, वक्खो वक्खी जाहीं दा।
चौंसी पैंसी खद्दर धोतर, मलमल खाशा इक्का सूत्तर।
पूणी विच्चों बाहर आवे, भगवा भेस गोसाईं दा।
कुड़ीआं हत्थीं छापां छल्ले, आपो आपणे नाम सवल्ले।
सब्भा हिक्का चांदी आखो, कण-कण चूड़ा बाहीं दा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भेड़ा बकरियां चारन वाला, ऊंठ मझीआं दा करे संभाला।
रूड़ी उत्ते गद्दों चारे, ओह भी वागी गाईं दा।
बुल्ला शौह दीजात की पूछनैं, शाकर हो रज़ाई दा।
जे तूं लोड़े बाग़ बहारां, चाकर रहो अराइयां दा।

साईं छप तमाशे नूं आया

साईं छप तमाशे नूं आया, तुसी रल मिल नाम ध्यायो।
लटक सज्जण दी नाहीं छपदी, सारी खलकत सिकदी तपदी।
तुसीं दूर न ढूंडण जाओ, तुसीं रल मिल नाम ध्याओ।
रल मिल सईओ आतण पाओ, इक बंने विच जा समाओ।
नाले गीत सज्जण दा गाओ, तुसीं रल मिल नाम ध्याओ।
बुल्ला बात अनोखी एहा, नच्चण लगी तां घुंघट केहा।
तुसीं परदा अक्खीं थीं लाहो, तुसीं रल मिल नाम ध्यायो।

साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे

साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
आपे पाईयां कुंडीयां तैं, ते आपे खिचदा हैं डोर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
अरश कुरसी ते बांगां मिलियां, मक्के पै गया शोर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
बुल्ला शौह असां मरना नाहीं, मर जावे कोई होर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुनो तुम इश्क़ की बाज़ी

सुनो तुम इश्क़ की बाज़ी, मलायक हों कहां राज़ी।
यहां बिरहों पर होगा जी, वेखां फिर कौन हारेगा।
साजन की भाल हुण होई, मैं लहू नैण भर रोई।
नच्चे हम लाह कर लोई, हैरत के पत्थर मारेगा।
महूरत पूछ कर जाऊं, साजन को देखने पाऊं।
उसे मैं ले गले जाऊं, नहीं फिर ख़ुद गुजारेगा।
इश्क़ की तेग़ से मूई, नहीं वोह ज़ात की दूई।
और पिया पिया कर मूई, मोयां फिर रूह चितारेगा।
साजन की भाल सर दीआ, लहू मथ अपना पीआ।
कफ़न बाहों से सी लिया, लहद में पा उतारेगा।
बुल्ला शौह इश्क़ है तेरा, उसी ने जी लिया मेरा।
मेरे घर-बार कर फेरा, वेखां सिर कौण वारेगा।

हिंदू नहीं न मुसलमान

हिंदू नहीं न मुसलमान, बहीए त्रिंजण तज अभिमान।
सुंनी ना नहीं हम शिया, सुल्हा कुल का मारग लीआ।
भुक्खे ना नहीं हम रज्जे, नंगे ना नहीं हम कज्जे।
रोंदे ना नहीं हम हसदे, उजड़े ना नहीं हम वसदे।
पापी ना सुधरमी ना, पाप पुंन की राह ना जां।
बुल्ले शाह जो हरि चित लागे, हिंदू तुरक दूजन त्यागे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

www.pilgrimsbooks.com

पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग के अन्य प्रकाशनों के सम्बन्ध में
आवश्यक जानकारी के लिये हमारी
website : www.pilgrimsbooks.com पर देखें।
या
डाक द्वारा सूची-पत्र मंगाने के लिये
निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें–

पिल्ग्रिम्स बुक हाउस
बी० 27/98-ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी–221010
टेलीफोन : (91-542) 2314060
फैक्स : (91-542) 2312456
E-mail : pilgrims@satyam.net.in

पिल्ग्रिम्स बुक हाउस
2391, तिलक स्ट्रीट, चूना मण्डी
पहाड़गंज, नई दिल्ली–110055
टेलीफोन : 91-11-23584015, 23584839
फैक्स : 91-11-23584019
E-mail : pilgrimsindc@gmail.com

पिल्ग्रिम्स बुक हाउस
पो० बा० नं०–3872, थमेल, काठमाण्डू, नेपाल
टेलीफोन : (977-1) 4700942, 4700919
फैक्स : (977-1) 4700943
E-mail : pilgrims@wlink.com.np

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमृतवाणी श्रृंखला की अन्य पुस्तकें

महापुरुषों की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-465-0 — मूल्य : रु० ७५/-

अघोरेश्वर भगवान राम की अमृतवाणी — सं.-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-530-4 — मूल्य : रु० २५/-

गुरु नानक की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-531-2 — मूल्य : रु० २५/-

ईसा मसीह की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-532-0 — मूल्य : रु० २५/-

भगवान बुद्ध की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-533-9 — मूल्य : रु० २५/-

महात्मा गांधी की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-534-7 — मूल्य : रु० २५/-

कबीर की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-535-5 — मूल्य : रु० २५/-

महावीर की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-536-3 — मूल्य : रु० २५/-

श्रीराम की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-539-8 — मूल्य : रु० २५/-

श्रीकृष्ण की अमृतवाणी — संकलन-गोपाल ठाकुर
ISBN—81-7769-550-9 — मूल्य : रु० २५/-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिलग्रिम्स पब्लिशिंग की अमृतवाणी शृंखला

सूफी सन्त साईं बुल्लेशाह ईश्वर को प्रेमी एवं प्रियतमा के रूप में देखते थे। आपका कहना था कि यह शरीर मन्दिर है, जहां हर पल खुदा निवास करता है।

बुल्ला शौह इश्क़ है तैरा, उसी ने जी लिया मेरा।
मेरे घर-बार कर फेरा, वेखां सिर कौण वारेगा॥

PILGRIMS PUBLISHING
◆ Varanasi ◆
www.pilgrimsbooks.com

Religion
Rs. 30.00

ISBN 81-7769-555-X
9788177695557

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi